Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

सामाइयमाहु तस्स जं,
जो अप्पाण भए ण दंसए।

जो भय से विचलित नहीं होता, उस साधक के सामायिक होता है।

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 9 • 6 - 12 दिसंबर, 2021 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 04-12-2021 • पेज : 12 • ₹ 10

पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया ने लिया पूज्यप्रवर से आशीर्वाद

अहिंसा और मैत्री भावना जीवन में परिलक्षित हो : आचार्यश्री महाश्रमण

बेगु, २५ नवंबर, २०२१

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी मेवाड़ के बेगु शहर में पधारे। बेगु में तेरापंथ के आचार्यों में पूज्यप्रवर का प्रथम बार पदार्पण हो रहा हैं बेगु का हर श्रावक पूज्यप्रवर की अभिवंदना में हर्षित है। जैन-अजैन सभी लोग पूज्यप्रवर का स्वागत करने को आतुर थे।

महामनीषी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में ज्ञान का बहुत महत्त्व है। ज्ञान होता है, तो आदमी का आचार भी सम्यक् हो सकता है। आदमी को ज्ञान हो कि मेरी आत्मा का कल्याण कैसे होगा, मुझे कौन से रास्ते पर चलना चाहिए तो आदमी वैसा आचरण कर सकता है।

कुछ लोग दुनिया में जानते तो हैं, पर कर नहीं सकते। कुछ लोग करने में सक्षम होते हैं, पर कैसे करना ये ज्ञान नहीं होता। ऐसे कुछ-कुछ लोग होते हैं, जिनमें ज्ञान भी होता है और ज्ञानानुसार करने की क्षमता भी होती है। ज्ञान सम्यक् हो तो यही आचरण की संभावना बन सकती है।

हमारी दुनिया में कितने ग्रंथों में कितना ज्ञान भरा पड़ा है, पर सार भी

समझ में आ जाए तो कल्याण हो सकता है। 'वेद-पुराण' कुरान के सारे अक्षर धोय। प्रेम-प्रेम लिख डालिए, कुछ नुकसान न होय।' सार की बात है, प्रेम की भावना, अहिंसा-मैत्री।

ज्ञान अनंत है। समय कम है। जीवन काल में बीच में बाधाएँ भी आ जाती हैं। सारभूत को पढ़ लो, जैसे हंस पानी को छोड़ देता है, और दूध को ग्रहण कर लेता है। आचार्य संयमभव व मुनि मनन का घटना प्रसंग समझाया कि किस तरह उन्होंने सार रूप में दशवैकालिक आगम की रचना की थी। मुनि मनन का कल्याण कर दिया। जीवन में सार को ग्रहण करें।

अहिंसा-मैत्री हमारे जीवन में आए। सभी प्राणियों के प्रति मैत्री गुणवानों के प्रति प्रमोद भाव रहे। जो दुःखी हैं, उनके प्रति करुणा का भाव एवं विपरीत वृत्ति में मध्यस्थ रहे। ये चार भावनाएँ हैं, इनका हम अभ्यास करें। दूसरों को सुखी देखकर हमें कभी दुःखी नहीं बनना चाहिए। दूसरों को दुःखी देखकर हमें कभी सुखी नहीं बनना चाहिए। धर्म का सिद्धांत है—समता-शांति रखो।

पूज्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा के सूत्रों को समझाकर स्वीकार करवाए। बेगु से मेवाड़ की विदाई हो रही है। मेवाड़ की जनता में खूब शांति रहे, चित्त में समाधि रहे। खूब आध्यात्मिकता बनी रहे। मेवाड़ का अच्छा प्रवास रहा। पूज्यप्रवर ने वसुंधरा राजे सिंधिया को आशीर्वचन फरमाया।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में महिला मंडल, डांगी परिवार, सभाध्यक्ष मदन डांगी, सभा मंत्री प्रदीप डांगी, ओसवाल समाज से बरदीचंद कोठारी, श्रमण संघ अध्यक्ष बलवंत सिंह सुराणा, दिगंबर समाज से अभय कुमार लुहाड़िया, बेगू नगरपालिका चेयरमैन रंजना शर्मा, विवेक धाकड़, नेमीचंद डांगी, पीयूष बाबेल, विजय नागौरी, नरेंद्र पुरोहित, राजकुमार फत्तावत भेरूलाल बाफणा ने अपनी भावना रखी।

पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए एवं अपनी भावना अभिव्यक्त की।

राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने कहा कि आज मेरे लिए खुशी का मौका है कि मुझे आचार्यश्री के दर्शन का मौका प्राप्त हुआ है। दस वर्ष पहले आपका मेवाड़ में पदार्पण हुआ तब आपका स्वागत किया था। आज मेवाड़ से विदाई हो रही है। आचार्यप्रवर के तीन संदेशों को हमने भी अपनाने की कोशिश की है। राजस्थान को आगे बढ़ाने के लिए ये संदेश बहुत महत्त्वपूर्ण है।

अभय की साधना से आदमी सुखी बनता है : आचार्यश्री महाश्रमण

जोगणिया मंदिर, २६ नवंबर, २०२१

जैन जगत के महान सूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी के भीतर अनेक वृत्तियाँ होती हैं। उनमें एक है—भय की वृत्ति। जैन वाङ्मय में संज्ञाएँ बताई गई हैं। दस संज्ञाएँ भी आगम में प्राप्त होती हैं और चार संज्ञाएँ भी होती हैं। वे हैं—आहार संज्ञा, भय संज्ञा, मैथुन संज्ञा, परिग्रह संज्ञा।

ये संज्ञा एक वृत्ति, एक भीतर का भाव होता है। मोहनीय कर्म का इतना बड़ा परिवार है, उसमें विभिन्न सदस्य हैं। गुस्सा, अहंकार, माया, लोभ, भय आदि कई सदस्य हैं। भय की वृत्ति के कारण आदमी डर जाता है। अनेक कारणों से आदमी डरता है। यह डरना एक दौर्बल्य है, कमजोरी है।

आदमी डरता भी है और डराने का प्रयास भी कर लेता है। साधना की दृष्टि से ये दोनों ही अच्छे नहीं हैं। डराना हिंसा का काम है। उत्तम बात यह है कि आदमी न तो स्वयं डरे न दूसरों को डराए। यह अभय की साधना है। वह आदमी सुखी होता है। अनेक प्रकार के दानों में अभयदान श्रेष्ठ दान है। मैं किसी को न मारूँगा, मुझे छः काय के जीवों को मारने का त्याग है।

साधु के अहिंसा महाव्रत होता है, तो अभयदान भी उसके होता है। आदमी किसी बड़े आदमी से भी डर सकता है, यह एक प्रसंग से समझाया कि कभी बड़े आदमी भी अभयदान दे सकते हैं। सब प्राणी अभयदान चाहते हैं। मैं किसी प्राणी को शिकार से नहीं मारूँगा। अणुव्रत का भी नियम है कि मैं निरपराध प्राणी की संकल्पपूर्वक हत्या नहीं करूँगा।

(शेष पृष्ठ २ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
6 - 12 दिसंबर, 2021

✦ *विलासिता एवं आसक्ति से मन को हटाएँ तथा अटैचमेंट से डिटेचमेंट की ओर आगे बढ़ें।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

विद्यार्थियों में ज्ञान के साथ हो विनयभाव का विकास : आचार्यश्री महाश्रमण

कोटून्दा, २४ नवंबर, २०२१

भीलवाड़ा जिले में ५ दिन के विहार के साथ पूज्यप्रवर १८ किलोमीटर विहार कर चित्तौड़गढ़ जिले के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कोटून्दा पधारे।

भारतीय ऋषि परंपरा के महान संत आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि एक आदमी विनीत होता है, एक अविनीत भी हो सकता है। शास्त्रकार ने मानो चेतावनी सी दी है कि जो अविनीत होता है, उसे विपत्ति मिलती है। जो विनीत होता है, उसे संपत्ति मिलती है। आदमी विपत्ति से परहेज करना चाहता है। चाह होना एक बात है पर राह कौन सी ली है। यह एक महत्त्वपूर्ण बात है। चाह क्या है, और राह क्या है?

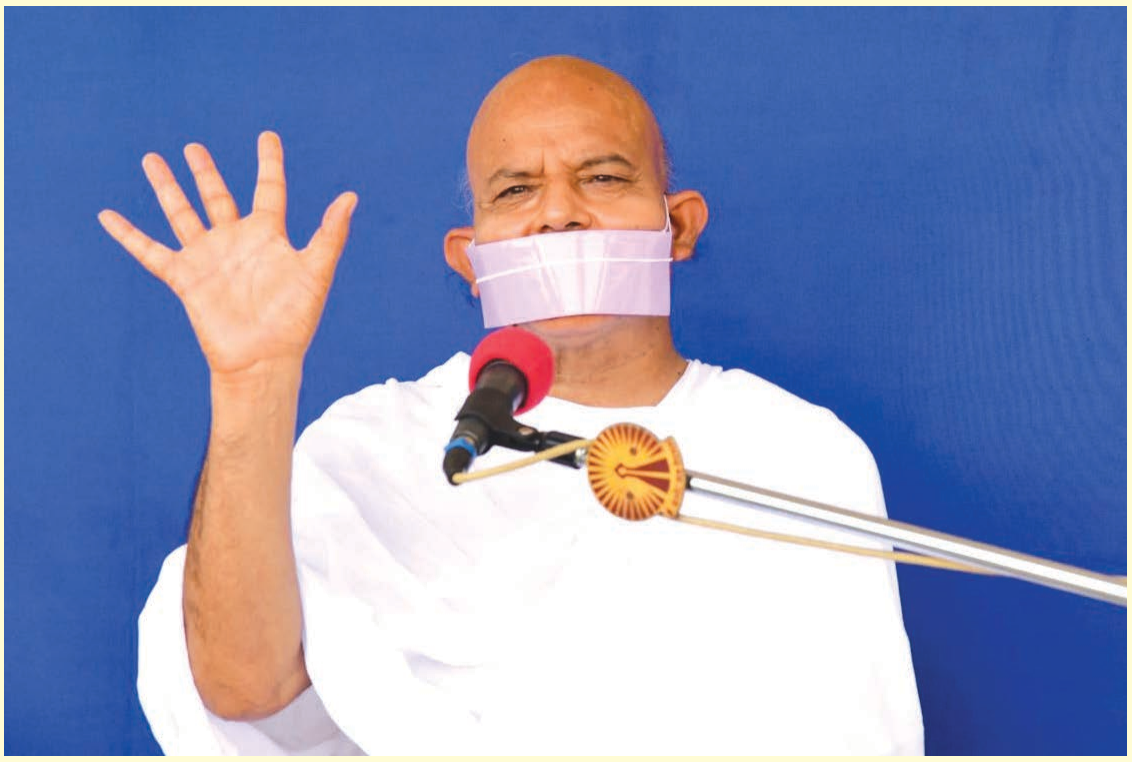

चाह और राह में सामंजस्य होता है, तब तो चाह की उपलब्धि हो सकती है। चाह के साथ राह भी है, पर राह पर चलने का उत्साह भी होना चाहिए। तो लाभ हो सकता है। विनीत वह है जिसमें घमंड का भाव न हो। अविनीत तो अनुशासन हीन होता है। विनय से ज्ञान प्राप्त हो सकता है। जो अभिवादनशील है, वृद्धों की सेवा करने वाला है, उसको चार चीजों का विकास होता है, उसका आयु, विद्या, यश और बल बढ़ता है।

विनीत का विकास कई संदर्भों में हो सकता है। मुनि खेतसी जी स्वामी के विनय भाव का प्रकरण समझाया। वे विनय से आचार्य तुल्य हो गए थे। नम्रता है, तो ऐसी संपत्ति मिल सकती है, जो पद से भी बड़ी हो सकती है। विद्यार्थी में विद्या का विकास होना अच्छा है, पर विद्या के साथ उनके आचरणों में भी उन्नति की स्थिति आए, यह अपेक्षित है।

ज्ञान के साथ आचार बढ़िया हो। कोश ज्ञान अधूरा है। यह एक प्रसंग से समझाया कि अकिंचन साधु के लिए तो खोट (बुरी आदत) बढ़िया गिफ्ट है। विद्या का घमंड एक खोट है। आदमी को किसी पदार्थ का घमंड नहीं करना चाहिए।

राजनीति में पद भी सेवा का साधन है। सेवा तो पद का उपहार है। अर्थ या ताकत या बाहुबल का भी घमंड नहीं करना चाहिए। क्या पता कब क्या हो जाए। सौंदर्य रूप का बढ़िया होना बड़ी बात नहीं है। गुणवत्ता ज्ञान का महत्त्व है। हम घमंड में न जाएँ, निरहंकारता में रहने का प्रयास करें। अहिंसा यात्रा के तीन संकल्पों को समझाकर विद्यार्थियों एवं स्थानीय लोगों को स्वीकार करवाए।

मुनि दर्शनकुमारजी एवं साध्वी चंद्रिकाश्री जी की स्मृति सभा

पूज्यप्रवर ने प्रवचन में भीलवाड़ा में प्रवासित मुनि दर्शनकुमार जी एवं जयपुर में प्रवासित साध्वी चंद्रिकाश्री जी के प्रयाण होने पर स्मृति सभा आयोजित की गई। आचार्यप्रवर ने दोनों चारित्रात्माओं का परिचय देते हुए उनकी आत्मा के प्रति मध्यस्थ भावों के साथ आगे की गति की मंगलकामना करते हुए चार लोगस्स का ध्यान करवाया।

मुख्य मुनि महावीरकुमार जी, मुख्य नियोजिका विश्रुतविभा जी, साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी, साध्वी मुदितयशा जी, साध्वी ऋद्धिप्रभा जी, मुनि योगेश कुमार जी, मुनि कीर्तिकुमार जी, मुनि ऋषभ कुमार जी, मुनि कोमल कुमार जी ने भी अपनी भावांजलि अर्पित की।

स्कूल के प्राध्यापक राजेश कुमार जी जोगिड़ ने पूज्यप्रवर का स्वागत किया। संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

ऑनेस्टी इज द बेस्ट पॉलिसी : आचार्यश्री महाश्रमण

बड़लियास, २२ नवंबर, २०२१

जिन शासन उद्धारक आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः लगभग ११ किमी का विहार कर बड़लियास ग्राम में पधारे। परमपूज्य आचार्यप्रवर ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि अपने आप सत्य की खोज करो। स्वयं सत्य खोजो और सबके साथ मैत्री करो।

यथार्थ ज्ञान प्राप्त करना सत्य की प्राप्ति करना होता है। विद्यालयों में विद्यार्थी पढ़ते हैं, ज्ञान प्राप्त करते हैं। ज्ञान प्राप्त करना भी जीवन की एक उपलब्धि हो सकती है। शिक्षा संस्थानों में ज्ञान का आदान-प्रदान होता है। लौकिक विषयों के साथ कुछ अध्यात्म विद्या, जीवन विद्या भी पढ़ाई जाती होगी। विद्यार्थियों में संस्कार भी अच्छे आएँ। ईमानदारी, मैत्री, नशामुक्ति और संयम रखने का संस्कार आएँ।

ज्ञान के समान कोई पवित्र चीज नहीं। ज्ञान के साथ अच्छे संस्कारों की शिक्षा भी मिलती रहनी चाहिए। एक दृष्टांत से समझाया कि परमात्मा सभी को देखते हैं, उनसे छिपा हुआ कुछ नहीं हो सकता। इसलिए बुरा काम नहीं करना चाहिए। ऐसी शिक्षाएँ विद्यालयों में मिलती रहे। ऑनेस्टी इज द बेस्ट पॉलिसी ये जीवन में आए तो बढ़िया बात हो सकती है। यह भी एक प्रसंग से समझाया।

बच्चे ही आगे चलकर बड़े आदमी बनते हैं। आदमी में ईमानदारी के साथ मैत्री भी रहे। यह भी एक प्रसंग से समझाया कि बिना मतलब झगड़ा न करें। बच्चों में संस्कार आएँ कि नशा नहीं करना। नशीली चीजों के सेवन से बचें। विद्यार्थी समाज का, देश का भविष्य होते हैं। माता-पिता भी ध्यान दें कि बच्चों को घर में भी अच्छे संस्कार मिलें। विद्यालय में, माता-पिता से, टीवी से एवं धर्मगुरुओं से अच्छे संस्कार मिलें। चारों ओर से संस्कारों की वर्षा होती रहे, तो विद्यार्थियों में अच्छे संस्कार आ भी सकते हैं।

कोरोना की स्थिति ने पूरे विश्व को चपेट में ले लिया था, मन में अभय, शांति और समता का भाव रहे। संयम की चेतना रहे। बालक, पालक, शिक्षक और संचालक यह ध्यान दें कि कैसे ज्ञान और अच्छे संस्कार का विद्यार्थियों में विकास हो। विद्यार्थी की चेतना व समाज और राष्ट्र अच्छा बन सकेगा। बाल पीढ़ी पर ध्यान देकर उसका अच्छा विकास होना वांछनीय है।

पूज्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा के तीन सूत्र समझाकर स्थानीय लोगों एवं विद्यार्थियों को स्वीकार करवाए।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में बड़लियास की ओर से ठाकुर साहब दिलीप सिंह, कल्याणमल विद्यालय परिवार से सत्यनारायण शर्मा, प्रकाश सरपंच, भंवरलाल चतुर्वेदी, रेगर समाज से सुभाष, महेश्वरी समाज से रमेश पोरवाल, जगन्नाथ सिंह ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि दुनिया की सबसे महँगी चीज ईमानदारी है।

अभय की साधना से आदमी सुखी...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

यह अहिंसा धर्म है, इस अहिंसा धर्म की एक आत्मा अभय भी है। डरो मत, डराओ मत। तभी अभय का भाव पुष्ट हो सकता है। सबके साथ मैत्री भाव रखें। प्रेक्षाध्यान में भी अभय की अनुप्रेक्षा का प्रयोग है। भय लगे तो मंत्र का आलंबन ले सकते हैं। नमस्कार महामंत्र पवित्रतम मंत्र है। मंत्र में शब्द के साथ अर्थ का भी महत्त्व है। भाव का महत्त्व है। शब्द जड़ है, अर्थ उसकी आत्मा है, तभी उसके साथ श्रद्धा जुड़ती है।

कई बार चित्र से भी मन में अच्छे भाव उसके अनुरूप आ सकते हैं। मंत्र से कर्मों की काली माया दूर हो ये बड़ी बात हो सकती है। ॐ भिक्षु के जाप से भी भीतर अभय का भाव जागृत हो सकता है। डरना तो मन की कमजोरी है, पर दूसरों को डराना तो छोड़ें। निरूकंपा के भाव से असातवेदनीय कर्म का बंध हो सकता है। हम अहिंसा की धारा में आगे बढ़ें, इसलिए हमारा अभय का भाव भी पुष्ट हो, यह अपेक्षित है।

अहिंसा यात्रा हमारी चल रही है, इसके तीनों सूत्र अभय से जुड़े हुए हैं। हम अभय की दिशा में आगे बढ़ें, यह हमारे लिए श्रेयस्कर हो सकता है। संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

✦ *हमारे भीतर अनंत ज्ञान, अनंत आनंद और अनंत शक्ति है। हम उसका अनुभव करने का प्रयास करें। ध्यान के द्वारा इनका साक्षात्कार किया जा सकता है।*

✦ *व्यक्ति अपने गुणों के कारण साधु कहलाता है और अवगुणों के कारण असाधु कहलाता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

त्रिदिवसीय तेरापंथ साहित्य एवं हस्तकला प्रदर्शनी का आयोजन

कालबादेवी, मुंबई।

शासनश्री साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय' के सान्निध्य में त्रिदिवसीय तेरापंथ साहित्य एवं हस्तकला प्रदर्शनी आयोजित हुई। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन महाराष्ट्र सरकार भाजपा उपाध्यक्ष राज के पुरोहित ने किया। नगर सेवक आकाश राज पुरोहित, राहुल नार्वेकर (एमएलए), मंजु लोढ़ा एवं महानगर के कई वरिष्ठ महानुभावों ने प्रदर्शनी देखी एवं तेरापंथ समाज के प्रति आभार प्रकट किया।

मुंबई तेरापंथ सभा के अध्यक्ष नरेंद्र तातेड़, विमल सोनी, महिला मंडल की अध्यक्ष रचना हिरण, मुंबई अणुव्रत समिति की अध्यक्ष कंचनदेवी सोनी, मंत्री वनिता बाफना, आचार्य महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउंडेशन के अध्यक्ष किशनलाल डागलिया, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष गणपत डागलिया, अर्हम टॉवर से मंदिर मार्गी पाठशाला के विद्यार्थीगण, ठाकुरद्वार स्थानकवासी पाठशाला के विद्यार्थी, महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों ने एवं दक्षिण मुंबई ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने हस्तकला देखी और दंग रह गए। प्रदर्शनी में नेरूल, नालासोपारा, वाशी, थाना, कुर्ला, घाटकोपर, मलाड, गोरेगाँव आदि के कई उपनगरों से भाई-बहन पधारे।

इस प्रदर्शनी को आयोजित करने में साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय', साध्वी प्रियंवदा जी, साध्वी प्रेरणाश्री जी, साध्वी मृदुयशा जी एवं साध्वी ऋद्धियशा जी का अथक श्रम रहा। इस प्रदर्शनी में तेरापंथ कन्या मंडल, ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने पूरा समय दिया। इस प्रदर्शनी को सफल और व्यवस्थित बनाने में किशनलाल डागलिया, गणपतलाल डागलिया, नितेश धाकड़, दिनेश धाकड़ सहित अनेक सदस्यों एवं कार्यकर्तागणों का सहयोग रहा। आभार ज्ञापन तेयुप के उपाध्यक्ष नितेश धाकड़ ने किया। संचालन तेयुप के मंत्री रोनक धाकड़ ने किया।

जीवन विज्ञान दिवस का आयोजन

अहमदाबाद।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी जीवन विज्ञान विभाग के तत्त्वावधान में अणुव्रत समिति द्वारा शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के सान्निध्य में आचार्य महाप्रज्ञ को प्रदत्त 'महाप्रज्ञ' अलंकरण दिवस को 'जीवन विज्ञान दिवस' के रूप में तेरापंथ भवन, शाहीबाग में मनाया गया।

अणुव्रत समिति कार्यकारी सदस्य पिस्तादेवी छाजेड़, रेखा धुप्या और ज्ञानशाला ज्ञानार्थी मोक्षित जैन व ध्वनि बागरेचा ने अणुव्रत गीत प्रस्तुत करते हुए कार्यक्रम का मंगलाचरण किया।

शासनश्री साध्वी सरस्वती जी ने कहा कि कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी को हम जीवन विज्ञान दिवस के रूप में मनाते हैं। जीवन विज्ञान जीने का विज्ञान है, जीवन जीने की सर्वोत्तम कला है—जीवन विज्ञान।

साध्वी संवेगप्रभा जी ने बताया कि प्रज्ञा पुरुष आचार्य महाप्रज्ञ जी महान दार्शनिक, महान वक्ता, कवि, सार्थक साहित्यकार थे। आपने अनेक ग्रंथों का सृजन भी किया। शासनश्री साध्वी सरस्वती जी द्वारा रचित गीतिका का संगान भी किया।

साध्वी परमार्थप्रभा जी ने अपना उद्बोधन दिया। उपासक धनराज छाजेड़ ने जीवन विज्ञान के महत्त्व को समझते हुए कैसे ध्यान, यौगिक क्रियाओं, प्राणायाम से शरीर को कैसे स्वस्थ रख सकते हैं, उसकी जानकारी दी। अणुव्रत समिति अध्यक्ष सुरेश बागरेचा ने स्वागत वक्तव्य दिया।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कांटेस्ट 'निबंध प्रतियोगिता' में प्रथम कनिषा जैन का सम्मान अणुविभा द्वारा प्राप्त मोमेंटो से किया गया। आभार ज्ञापन अणुव्रत समिति मंत्री मनोज सिंघी ने किया। कार्यक्रम का संचालन ममता संकलेचा ने किया।

ज्ञान, दर्शन, चारित्र का विकास करें

गांधीनगर-बैंगलोर।

साध्वी लावण्यश्री जी ने कहा कि ज्ञान पंचमी के दिन का अपना विशेष महत्त्व होता है, हर व्यक्ति को अपने आध्यात्मिक, मानसिक व बौद्धिक विकास हेतु प्रयत्नशील होना चाहिए। साध्वी सिद्धांतश्री जी व साध्वी दर्शितप्रभा जी ने गीतिका का संगान किया व भावनाएँ व्यक्त की।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष सुरेश दक, महिला मंडल अध्यक्षा स्वर्णमाला पोखरना, तेयुप अध्यक्ष विनय बैद, अणुव्रत समिति अध्यक्ष शांतिलाल पोरवाल, यशवुतपुर सभा मंत्री महावीर ओस्तवाल आदि अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों ने अपना वक्तव्य दिया। ललित सेठिया, शांति सकलेचा ने गीतिका द्वारा मंगलभावना व्यक्त की। इस अवसर पर सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं अन्य जन उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री नवनीत मूथा ने किया।

आध्यात्मिक मिलन समारोह

पर्वत पाटिया।

साध्वी चरितार्थप्रभा जी आदि अंतरोली से विहार करके एवं साध्वी लबिधश्री जी विहार करके तेरापंथ भवन, पर्वत पाटिया पधारे। जहाँ दोनों सिंघाड़े का आध्यात्मिक मिलन हुआ। ज्ञातव्य है कि साध्वी चरितार्थप्रभा जी वापी पावस के बाद गुरुदर्शन राजस्थान की ओर पधार रहे हैं।

इस अवसर पर श्रावक समाज के अलावा सभी सभा-संस्था के पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित रहे एवं आध्यात्मिक मिलन को निहारकर धन्यता का अनुभव किया। दोनों ही सिंघाड़ों की रास्ते की सेवा में तेयुप, पर्वत पाटिया के सदस्यों ने अपनी सहभागिता दर्ज कराई।

आध्यात्मिक दिवाली

फारबिसगंज।

सभी त्योहारों में दीपावली का त्योहार निराला माना गया है। लौकिक मान्यता है कि भगवान राम अयोध्या लौटे तब दीए जलाकर उनका स्वागत किया गया। वहीं जैन धर्म के २४वें तीर्थंकर भगवान महावीर का निर्वाण आज के दिन ही हुआ था, इसीलिए दीप जलाए गए। दीपावली का संदेश है कि ज्ञान का प्रकाश फैले। ये विचार तेरापंथ सभा भवन में डॉ० साध्वी पीयूषप्रभा जी ने व्यक्त किए। साध्वीश्री जी ने भगवान महावीर के निर्वाण संबंधी प्रसंग सुनाए साथ ही महावीर स्वामी व गौतम स्वामी का जप करवाया। भगवान महावीर का जप एवं स्तुति तेमम के तत्त्वावधान में आयोजित हुआ।

साध्वीश्रीजी ने दीपावली पर विशेष एवं प्रभावशाली मंत्रों का उच्चारण किया। एवं विशेष मंगलपाठ का श्रवण करवाया। सभा अध्यक्ष निर्मल मरोठी ने सभी के प्रति दीपावली की शुभकामनाएँ प्रेषित की। ज्ञानशाला के बच्चों ने पटाखे न छोड़ने का संकल्प लिया।

विशिष्ट प्रतिभा

विश्व के टॉप २ प्रतिशत वैज्ञानिकों में डॉ० महावीर गोलेच्छा

तेरापंथ धर्मसंघ के श्रावक एवं भारत सरकार के इंस्पायर फेलो डॉ० महावीर गोलेच्छा को इस साल स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय की ओर से जारी वैज्ञानिकों की सूची के शीर्ष दो प्रतिशत में शामिल किया गया है। अमेरिका का स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय हर साल दुनिया भर के शीर्ष दो प्रतिशत शोधकर्ताओं के लिए उनके शोध प्रकाशनों के आधार पर डेटा जारी करता है। यह डेटा प्रतिष्ठित एल्सेवियर प्रकाशक की ओर से प्रकाशित किए जाते हैं।

डॉ० महावीर गोलेच्छा को पब्लिक हेल्थ, स्वास्थ्य अनुसंधान के क्षेत्र में सम्मिलित किया गया, इस क्षेत्र में उन्होंने ५० भी ज्यादा अनुसंधान पत्र विश्व की प्रसिद्ध अनुसंधान पत्रिकाओं में प्रकाशित किए, जिसमें लांसेट, ब्रिटिश मेडिकल जर्नल, नेचर, ग्लोबल हेल्थ, अर्बन हेल्थ, ई-क्लीनिकल मेडिसिन, सोशन साइंस मेडिसिन प्रमुख है, डॉ० गोलेच्छा इन सभी पत्रिकाओं में अनुसंधान पत्र प्रकाशित करने वाले सबसे युवा भारतीय हैं।

ज्ञात रहे कि डॉ० गोलेच्छा ने अल्जाइमर एवं एपिलेप्सी जैसी जटिल मस्तिष्कीय बीमारियों के लिए कई मेडिसिन पर रिसर्च किया एवं उनकी दवा को खोजने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। डॉ० महावीर गोलेच्छा को उनके द्वारा मेडिसिन अनुसंधान, स्वास्थ्य नीति निर्धारण एवं सामाजिक सेवाओं में योगदान के लिए ३५ से अधिक इंटरनेशनल, नेशनल एवं सामाजिक सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है। डॉ० गोलेच्छा को अभातेयुप द्वारा आचार्य महाश्रमण युवा व्यक्तित्व पुरस्कार एवं टीपीएफ द्वारा टीपीएफ अचीवर्स अवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है।

डॉ० महावीर गोलेच्छा ने स्वास्थ्य नीति निर्धारण में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है, जिसमें नेशनल हेल्थ मिशन, प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना, जेनेरिक मेडिसिन योजना, मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना, स्वास्थ्य सिस्टम परियोजना इत्यादि प्रमुख हैं।

डॉ० महावीर गोलेच्छा की उच्च शिक्षा एम्स, दिल्ली लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स एवं अमेरिका में हुई। वर्तमान में डॉ० महावीर गोलेच्छा आइआइपीएसजी से संलग्न हैं, वे भारत सरकार के नीति आयोग, स्वास्थ्य मंत्रालय एवं विज्ञान मंत्रालय के महत्त्वपूर्ण प्रोजेक्टों में कार्य कर रहे हैं, डॉ० गोलेच्छा गुजरात सरकार एवं भारत सरकार के कॉमन रिव्यु मिशन की टीम मेंबर भी हैं।

जैन विद्या कार्यशाला में पुरस्कार वितरण समारोह

बालोतरा।

साध्वी मंजुयशा जी के सान्निध्य में समण संस्कृति संकाय और अभातेयुप के तत्त्वावधान में आयोजित जैन विद्या कार्यशाला के पुरस्कार वितरण किए गए।

साध्वी मंजुयशा जी ने कहा कि बालोतरा श्रद्धावान और भक्तिपूर्ण क्षेत्र है, यहाँ के लोगों में धर्म और संघ के प्रति अटूट आस्था है। जैन विद्या कार्यशाला के क्षेत्र में तेयुप बालोतरा पूरे भारतवर्ष में सदैव प्रथम स्थान पर रहा हैं, यह बालोतरा परिषद के लिए अत्यंत गौरव की बात है।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि निवर्तमान अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी ने सभी संभागियों को बधाई देते हुए इसी तरह मेहनत करने की प्रेरणा दी। तेयुप अध्यक्ष संदीप ओस्तवाल ने स्वागत वक्तव्य दिया और कार्यशाला के प्रायोजक पवन कुमार, प्रवीण कुमार व मोहित कुमार सालेचा (जेठानी) परिवार के प्रति आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन और आभार तेयुप मंत्री नवीन सालेचा ने किया।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा मंत्री महेंद्र बैद, सिवांची-मालाणी संस्थान मंत्री ललित श्रीश्रीमाल, अभातेयुप कार्यसमिति सदस्य संजय वैदमूथा सहित कई संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। इस अवसर पर लगभग २२५ संभागियों को सम्मानित किया गया।

✦ वित्तीय उत्थान के साथ-साथ वृत्त की शुचिता को वृद्धिंगत करने का भी प्रयास किया जाए तो स्वस्थ समाज की संरचना की दिशा में प्रस्थान हो सकता है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

अनेकांतवाद कार्यशाला का आयोजन

बालोतरा।
अभातेममं के निर्देशानुसार रूपांतरण 'Make your life happy through अनेकांतवाद' श्री रूपांतरण एक्सप्रेस कार्यशाला का आयोजन साध्वी मंजुयशा जी के सान्निध्य में किया गया। मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र व प्रेरणा गीत का संगान महिला मंडल की बहनों के द्वारा किया गया। महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला संकलेचा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। साध्वी चिन्मयप्रभा जी ने कहा कि भगवान महवीर ने अनेक सिद्धांत दिए हैं जैसे—अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकांतवाद आदि जो अहिंसा अपरिग्रह को अपनाता है, वही अनेकांतवाद का जीवन जी सकता है।
इस कार्यशाला में साध्वी मंजुयशा जी ने भी अनेकांत विषय पर चर्चा की और साथ ही बहनों को रास्ते की सेवा की प्रेरणा दी और नववधुओं को जोड़ने की भी प्रेरणा दी। इस अवसर पर परामर्शक नारायणी देवी छाजेड़, लुणीदेवी गोलेच्छा, पीपी देवी ओस्तवाल, उपाध्यक्ष चंद्रा बालड़, रानी बाफना, सहमंत्री रेखा बालड़, कोषाध्यक्ष उर्मिला सालेचा, प्रचार-प्रसार मंत्री पुष्पा सालेचा, कन्या मंडल प्रभारी श्वेता सालेचा सहित अनेक सदस्यगण एवं अन्यजन लगभग ८० बहनों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन व आभार ज्ञापन मंत्री संगीता बोथरा ने किया।

अनेकांतवाद कार्यशाला का आयोजन

गदग।
तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी पद्मावती जी के सान्निध्य में व महिला मंडल के तत्त्वावधान में अनेकांतवाद कार्यशाला का आयोजन किया गया। शासनश्री साध्वी पद्मावती जी ने कहा कि भगवान महावीर ने चार प्रकार के सिद्धांत हमारे सामने दिए—अहिंसा, अपरिग्रह, अभय और अनेकांत। अनेकांत का अर्थ—अनाग्रह की वृत्ति का अर्जन और आग्रह वृत्ति का विसर्जन। तुम भी सही हम भी सही।
डॉ० साध्वी गवेषणा जी ने कहा कि समाज, परिवार और प्रत्येक व्यक्ति को अनेकांत की जरूरत है, अकड़-पकड़ और जकड़ के विराम का नाम ही है—अनेकांतवाद। साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि अच्छी सूरत से ज्यादा मायने अच्छा स्वभाव रखता है। सूरत तो उम्र के अनुसार बदल जाएगी पर अच्छा स्वभाव जीवन-भर आपका साथ देगा। साध्वी मेरुप्रभा जी ने गीतिका की प्रस्तुति दी। साध्वी दक्षप्रभा जी के मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। महिला मंडल के अध्यक्ष प्रेमलता कोठारी ने भाषण के द्वारा सबका स्वागत किया। आभार ज्ञापन कन्या मंडल प्रभारी सारिका संकलेचा ने किया। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल की मंत्री विजेता भंसाली ने किया।

अनेकांतवाद कार्यशाला का आयोजन

अमराईवाड़ी।
अभातेममं के निर्देशन में तेममं द्वारा कार्यशाला अनेकांतवाद का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के साथ उपासिका मंजुदेवी गेलड़ा ने की। महावीर अष्टकम के द्वारा महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण किया।
अध्यक्षा संगीता सिंघवी ने स्वागत वक्तव्य देते हुए अनेकांतवाद पर छोटे-छोटे उदाहरणों के माध्यम से समझाया। तत्पश्चात कन्या मंडल की प्रभारी रितिका गेलड़ा ने कन्या मंडल के कार्यक्रम की जानकारी दी और कैसे बनें सहारा, फैलाएँ उजियारा की कार्यशाला कन्याओं की उपस्थिति में रही। मंत्री लक्ष्मी सिसोदिया ने नारीलोक के आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी।
कार्यशाला की मुख्य वक्ता उपासिका मंजु गेलड़ा ने अनेकांतवाद की परिभाषा बताते हुए एक छोटी-सी स्टोरी के माध्यम से बताया कि हम परिवार, समाज, राष्ट्र और दुनिया को अनेकांत की दृष्टि से देखें तो हम शांत और खुशनुमा जीवन जी सकते हैं।
उपाध्यक्ष नीरू सिंघवी तथा सुरभि चंडालिया ने भी विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यशाला का संचालन ललिता बाफना ने किया एवं आभार ज्ञापन सुप्रिया मेहता ने किया।

कन्नड़ राज्योत्सव समारोह

विजयनगर।
कन्या मंडल ने कन्नड़ राज्योत्सव मनाया। ३० कन्याओं की उपस्थिति रही। कन्याओं द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कन्या मंडल के सदस्य रक्षिता ने कहा कि हम जिस राज्य में रहते हैं वहाँ की भाषा को महत्त्व देना चाहिए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सुरेश बी०वी० विजयनगर मंडल बीजेपी जनरल सेक्रेटरी, मुख्य अतिथि ने झंडा फहराने के पश्चात कार्यक्रम की शुरुआत की।
कर्नाटक राज्य और कन्नड़ भाषा के प्रति हमारा स्नेह जताने के लिए कन्या मंडल द्वारा एक लघु नाटिका की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम में महिला मंडल मंत्री सुमित्रा बरड़िया ने अपने विचार व्यक्त किए एवं कन्या मंडल प्रभारी मेघना हिरण व सपना मांडोत इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे कार्यक्रम को संपादित करने में खुशी लोढ़ा ने पूर्ण श्रम किया। पूजा दक और चेतन दक ने खुशी लोढ़ा को सहयोग दिया। कन्या मंडल सह-संयोजिका ने आभार ज्ञापन किया।

विकास का बहुत बड़ा माध्यम है तेरापंथ कन्या मंडल

मैसूर।
तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा 'उड़ान' 'कदम जमीं पर छू लें आसमां' कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में साध्वी राजुलप्रभा जी, साध्वी चैतन्यप्रभा जी की सन्निधि रही। मुख्य वक्ता अखिल भारतीय तेरापंथ कन्या मंडल प्रभारी अर्चना भंडारी रही।
कार्यक्रम के दौरान साध्वी राजुलप्रभा जी ने कहा कि आज विकास की दृष्टि से आसमान छू लेने की बहुत सुविधाएँ हैं, लेकिन कदम संस्कारों की जमीन पर ही स्थिर रहे, यह अपेक्षित हैं
साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने कहा कि स्वतंत्रता के साथ अनुशासन जीवन को नई दिशा दे सकता है। अपने वक्तव्य में अर्चना भंडारी ने कहा कि हमारे विचार, व्यवहार, क्रियाकलापों में जैनत्व एवं मानवीयता परिलक्षित होनी चाहिए। कन्या मंडल के सदस्य परस्पर मिलजुलकर एक-दूसरे के विकास में सहयोग दे। मैसूर कन्या मंडल ने एक लघु नाटिका के माध्यम से विषय को प्रस्तुत किया।
कार्यशाला की शुरुआत मंड्या कन्या मंडल के मंगलाचरण द्वारा हुई। मैसूर कन्या मंडल प्रभारी संतोष कोठारी ने भाषण द्वारा सबका स्वागत किया। कन्या मंडल संयोजिका दर्शना पोखरना ने कन्या मंडल प्रभारी अर्चना भंडारी का परिचय दिया। कन्या मंडल की सह-संयोजिका शिल्पा श्रीमाल ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन मोक्षी पितलिया ने किया। कार्यशाला में विभिन्न क्षेत्रों से लगभग ४० कन्याओं ने उपस्थिति दर्ज कराई।

टूटते परिवार बिखरते परिवार' वर्कशॉप का आयोजन

मदुरै।
समझपूर्वक बनाया गया समूह ही समाज कहलाता है। जिसकी सबसे छोटी इकाई परिवार हैं परिवार सामंजस्य की एक प्रयोगशाला है। परिवार की एकता के लिए आवश्यक है कि एक-दूसरों के प्रति स्नेह, समर्पण और सामंजस्य का भाव रहे। जिस परिवार में बड़ों के प्रति सम्मान और छोटों के प्रति वात्सल्य का व्यवहार होता है वह परिवार साक्षात स्वर्ग है। यह विचार मुनि अर्हत कुमार जी ने 'टूटते परिवार बिखरते परिवार' की वर्कशॉप पर व्यक्त किए। उन्होंने आगे कहा कि बौद्धिक युग में शिक्षा का जितना विकास हो रहा है, उतना ही मूल्यों का ह्रास भी हो रहा है। यह एक ज्वलंत समस्या है।
हमें रिश्तों की कदर करनी चाहिए, जिससे रिश्तों की डोर कमजोर ना हो सके। आपस में स्नेह दीप जलता रहे, सामंजस्य के सूत्र में बंधा हुआ परिवार कभी टूट नहीं सकता। एक-दूसरे की भावनाओं का सम्मान करें, जिससे परिवार में खुशहाली का वातावरण बना रहे। सहयोगी संत मुनि भरत कुमार जी, बाल संत जयदीप कुमार जी ने भी अपने उद्गार व्यक्त किए।
लीला देवी भवन में कार्यक्रम का प्रारंभ मंगलाचरण सूरत से सीमा और नीलम परमार ने किया। सभा अध्यक्ष जयंतीलाल जीरावला ने सभी का स्वागत किया। कन्या मंडल ने प्रस्तुति दी। महिला मंडल ने रोचक नाटक प्रस्तुत किया। आभार ज्ञापन स्थानकवासी समाज के अध्यक्ष नेमीचंद बाफना ने किया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री धीरज दुगड़ ने किया और अतिथिगणों का सम्मान सभा के पदाधिकारियों ने किया।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम
सत्र 2021-23

❋ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
❋ श्री अशोक श्रेयांस बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	11,00,000
❋ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
❋ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
❋ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
❋ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
❋ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
❋ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
❋ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
❋ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000

कलाओं से अभिमंडित है तेरापंथ धर्मसंघ

बोलाराम।
साध्वी काव्यलता जी ने तेरापंथ भवन में तेरापंथ के आईने में झलका कला का अद्भुत दृश्य, कलात्मक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। साधु-साध्वियों द्वारा हस्तनिर्मित वस्तुओं का बेजोड़ संग्रह को देखकर सैकड़ों-सैकड़ों लोग आश्चर्यचकित रह गए।
कई लोगों ने कहा कि साधु-साध्वियों द्वारा निर्मित यह दुर्लभ वस्तुएँ हमें प्रथम बार देखने को मिली हैं। जैसे-जैसे लोगों को पता चला लोग दूर-दूर से इसे देखने के लिए बोलाराम आने लगे। लगभग ४ घंटे चली कला प्रदर्शनी को देखने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। इसकी समायोजना में जहाँ साध्वी ज्योतियशा जी, साध्वी सुरभिप्रभा जी का श्रम निहित था, वहीं स्नेहा बांठिया, सुशीला लुणावत, नीरज सुराणा, विनीत लुणावत का परिश्रम भी सराहनीय था।

मंगलभावना समारोह के आयोजन

रोहिणी, दिल्ली

तेरापंथ भवन में समायोजित मंगलभावना समारोह कार्यक्रम का शुभारंभ रोहिणी की बहनों द्वारा मंगलाचरण से किया गया। कार्यक्रम में शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि रोहिणी क्षेत्र उर्वरक क्षेत्र है। यहाँ पर बीज वपन करते हैं। वे फलित पुष्पित शीघ्रता से होते हैं। कोरोना काल होते हुए भी जनता ने सब आध्यात्मिक कार्यों में सोत्साह भाग लिया। विविध कार्यशालाएँ एवं अनुष्ठान, दिल्ली तेयुप के द्वारा सुचारु रूप से समायोजित हुए।

साध्वी सुव्रतांजी, साध्वी सुमनप्रभा जी, साध्वी कार्तिकप्रभा जी व साध्वी चिंतनप्रभा जी ने गीत का सामूहिक संगान किया।

महासभा के उपाध्यक्ष सुखराज सेठिया, महासभा प्रभारी दिल्ली के०के० जैन, महासभा सदस्य संजय खटेड़, दिल्ली सभा के मंत्री डालमचंद बैद, अणुव्रत महासमिति से शांतिलाल जैन, दिल्ली महिला मंडल अध्यक्षा मंजु जैन, रोहिणी सभा अध्यक्ष मदनलाल जैन सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों ने अपने वक्तव्य व्यक्त किए एवं साध्वीश्री जी के आगे के विहार की मंगलकामना की। मंच संचालन रोहिणी सभा के महामंत्री राजेश बैंगानी ने किया।

राजराजेश्वरी नगर

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने चातुर्मास की परिसंपन्नता पर श्रावक समाज को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि आगमवाणी के अनुसार साधु-साध्वी अप्रतिबद्ध विहारी होते हैं, उनका संवास भी प्रशस्त है तथा प्रवास भी प्रशस्त होता है। साध्वीश्री जी ने कहा कि आरआर नगर के श्रावक समाज ने हमारे चतुर्मास को जप, तप, सामायिक, प्रवचन श्रवण आदि से उपलब्धिमय बनाया। हमने अनुभव किया कि यहाँ सभा, तेयुप, तेमम परिवार शासन भक्त हैं तथा गुरु इंगित पर समर्पित हैं।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने कहा कि सफलतम चातुर्मास प्रवास का सारा श्रेय श्रावक-श्राविका समाज को जाता है। उन्होंने कहा कि राजराजेश्वरी नगर कार्यकर्ताओं की खान है। हर कार्यक्रम में सभी का उत्साह और उमंग रही। एक से बढ़कर एक कार्यक्रमों की आयोजना रही।

नमस्कार महामंत्र से प्रारंभ हुए कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष मनोज डागा, तेयुप अध्यक्ष सुशील भंसाली, महिला मंडल अध्यक्षा लता बाफना ने साध्वीश्री जी के प्रति मंगलभावनाएँ व्यक्त की। सभा परिवार द्वारा भवन के निर्माण में सहयोग देने वाले तत्कालीन पदाधिकारियों एवं भवन निर्माण समिति के सदस्यों का सम्मान किया गया। पूर्व अध्यक्ष कमल दुगड़ ने भवन के विषय में जानकारी प्रदान की।

महिला मंडल, कन्या मंडल, तेयुप के द्वारा विदाई गीत प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित वरिष्ठ श्रावक महेंद्र श्रीमाल, विमल बांठिया, गणेशमल नाहर, आदि अनेक पदाधिकारीगण तथा सदस्यों ने अपनी भावनाएँ व्यक्ति की। कार्यक्रम में आभार ज्ञापन सभा सहमंत्री राजेश भंसाली ने किया। कार्यक्रम का संचालन दिनेश मरोठी ने किया।

जसोल

मुनि धर्मेश कुमार जी के सान्निध्य में ऐतिहासिक सफलतम चातुर्मास परिसंपन्नता पर मंगलभावना समारोह किया गया। मुनि धर्मेश कुमार जी ने कहा कि पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार चातुर्मास पूर्ण किया। यहाँ के भाई-बहनों में बहुत उत्साह व भक्ति, समर्पण देखने को मिला। यहाँ लोगों में ज्ञान के प्रति जागरूकता व तत्त्वज्ञान में बहुत रुचि है।

मुनिश्री ने बताया कि गुरुदेव की दृष्टि व इंगित से हमने जसोल चातुर्मास किया, यह धरती उर्वरा है, यहाँ लोगों में धर्म के प्रति अच्छी भावना है। सभी भाई-बहनों से ४ माह में हमारे द्वारा आपके मन को ठेस पहुँची हो तो खमतखामणा करते हैं।

सभी भाई-बहनों ने पूज्य गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर मुनिश्री के प्रति अपने भावों से शुभकामनाएँ व भावी आध्यात्मिक मंगलकामना की। मुनि धर्मेश कुमार जी ने विभिन्न विषयों द्वारा आत्मदर्शन की प्रेरणा दी। मुनि डॉ० विनोद कुमार जी, मुनि यशवंत कुमार जी आदि मुनिवृंद ने अपने प्रेरणादायी विचार व्यक्त किए।

अंत में हम पूरे समाज की ओर से इन चार माह में कोई अविनय असाधना हुई हो तो खमतखामणा करते हैं व आपकी आगामी संयममय यात्रा मंगलमय हो, ऐसी भावना करते हैं।

सभा के निवर्तमान अध्यक्ष डूंगरवाल सालेचा, भंवरलाल भंसाली, शंकरलाल ढेलड़िया, गौतमचंद सालेचा, भूपतराज कोठारी, पारसमल गोलेच्छा, तेयुप अध्यक्ष जितेंद्र मांडोत महिला मंडल अध्यक्ष सोहनीदेवी सालेचा आदि अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों ने अपने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल व कन्या मंडल द्वारा सामुहिक गीतों के द्वारा मंगलकामना की। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री माणकचंद संखलेचा ने किया।

विजयनगर

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में साध्वी प्रमिला कुमारी जी का मंगलभावना समारोह आयोजित किया गया। सर्वप्रथम कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। तत्पश्चात सभा के सहमंत्री प्रकाश गांधी द्वारा मंगलाचरण किया गया। सभा अध्यक्ष राजेश चावत ने सभी का स्वागत किया। इस अवसर पर साध्वी आस्थाश्री जी ने कहा कि करेज, कैरेक्टर व कॉन्फिडेंट आदि पाना चाहते हैं तो उस व्यक्ति को कहीं जाने की जरूरत नहीं वह चार महीने में साध्वीश्री जी के प्रवचन को यदि सुनें वह प्राप्ति हो जाती है।

साध्वी प्रमिला कुमारी जी ने उदाहरण देते हुए कहा कि जिस तरह सृष्टि में पंच तत्त्व का महत्त्व है, वैसे ही धर्मसंघ में सभा, महिला मंडल, तेयुप, अणुव्रत समिति, टीपीएफ आदि भी एक और उसके साथ चलती हैं। साध्वीश्रीजी ने कहा कि मंगलभावना समारोह भविष्य की कामना करते हुए भविष्य की मंगल प्रेरणा देते हुए हमें आगे बढ़ना है, हमें निरंतर उत्साह के साथ गतिमान रहना है।

इस अवसर पर अभातेयुप निवर्तमान अध्यक्ष विमल कटारिया, अभातेयुप महामंत्री पवन मांडोत, प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरना, सभा उपाध्यक्ष राकेश दुधोड़िया, महिला मंडल पूर्व महामंत्री वीणा बैद, महिला मंडल अध्यक्षा प्रेम भंसाली, बरखा पुगलिया आदि ने अपने विचार रखे। संचालन मंत्री मंगल कोचर ने किया।

गदग

शासनश्री साध्वी पद्मावती जी का मंगलभावना समारोह आयोजित किया गया। मंगलाचरण पीस्ता गांधी मेहता व शोभा संकेलचा ने किया। अमृतलाल कोठारी ने सभी का स्वागत किया।

शासनश्री साध्वी पद्मावती जी ने कहा कि साधु तो रमता भला होता है, वह गतिशील होता है। साध्वी मेरुप्रभा जी ने गीत का संगान किया। साध्वी मयंकप्रभा जी ने भी भावना व्यक्त की। साध्वी दक्षप्रभा जी ने सुमधुर मंगल संगान किया।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष अमृतलाल कोठारी, जैन समाज गौरव कांतिलाल भंसाली, कार्यकर्ता जितेंद्र जीरावला, जितेंद्र संकलेचा, कोषाध्यक्ष देवराज भंसाली ने मंगलभावना में अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। तेयुप अध्यक्ष दिनेश संकलेचा, विक्रांत कोठारी, गौतम जीरावला, रंजित संकेलचा, जनक संकलेचा, ललित गांधी मेहता ने गीतिका व मंगलभाव रखे।

जैन संघ के श्रावक अशोक गादिया, स्थानकवासी समाज से किशन बागमार, गौतम पालरेचा, ममता पालरेचा, कविता, भावना पोरवाल, इंद्रा बागमार ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। प्रथम संचालन जितेंद्र जीरावला व विजेता भंसाली ने किया। द्वितीय चरण कार्यक्रम का संचालन अक्षता संकलेचा प्रांजल सालेचा ने किया। आभार ज्ञापन मंत्री कमलेश जीरावला ने किया।

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

दिल्ली।

बीकानेर निवासी, दिल्ली प्रवासी सुरेंद्र ऋषि मोहित गोलछा के नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुशील डागा, प्रवीण गोलछा ने संपूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से संपादित करवाया।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र व भगवान महावीर की स्तुति से हुई। तेयुप दिल्ली के कार्यकर्ता सुरजीत पुगलिया ने तेयुप दिल्ली की तरफ से गोलछा का आभार ज्ञापन किया। तेयुप दिल्ली की तरफ से गोलछा परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

नूतन गृह प्रवेश

दिल्ली।

विजय कुमार-पुष्पा चोपड़ा दिल्ली प्रवासी का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से उपासक व संस्कारक राजकुमार जैन व संस्कारक प्रवीण गोलछा ने विधि-विधान व मंगलमंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। तेयुप की तरफ से चोपड़ा परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

नूतन गृह प्रवेश

गंगाशहर।

गंगाशहर निवासी संतोष देवी-सुरेश बोथरा के नूतन गृह का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा अभातेयुप संस्कारक पवन छाजेड़, देवेंद्र डागा और पीयूष लुणिया ने विधिविधानपूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया। तेयुप साथी विनीत बोथरा व वर्धमान चोपड़ा सहयोगी के रूप में उपस्थित रहे।

इस अवसर पर मांगीलाल संचेती, नवरतन संचेती, लीलम छाजेड़ व परिवार के सदस्यों की विशेष उपस्थिति रही। तेयुप गंगाशहर निवर्तमान अध्यक्ष पवन छाजेड़ ने बोथरा परिवार को बधाई प्रेषित की।

बुटिक का शुभारंभ

पूर्वांचल-कोलकाता।

राजलदेसर निवासी, पूर्वांचल-कोलकाता प्रवासी शालिनी बैद के बुटिक का शुभ मुहूर्त जैन संस्कार विधि से संपन्न हुआ। संस्कारक पुष्पराज सुराणा द्वारा विधिपूर्वक संपन्न करवाया गया।

कार्यक्रम में परिवारजनों एवं परिषद के उपाध्यक्ष व जैन संस्कार विधि प्रभारी धर्मेन्द्र बुच्चा, परिषद के मंत्री धीरज मालू, तेयुप सदस्य सीमांत नाहटा की उपस्थिति रही।

नव प्रतिष्ठान शुभारंभ

जयपुर।

रचना सेठिया के नव प्रतिष्ठान का जैन संस्कार विधि से संस्कारक श्रेयांस बैंगानी ने पूरे विधि-विधान से मंत्रोच्चार का संगान करते हुए संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में तेयुप, जयपुर के मंत्री सुरेंद्र नाहटा, कार्यसमिति सदस्य कुलदीप बैद ने परिषद की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

ज्ञानशाला शुभारंभ

साउथ हावड़ा।

सभा द्वारा एक नई रविवारीय ज्ञानशाला का शुभारंभ तेयुप ने जैन संस्कार विधि द्वारा ज्ञानशाला का उद्घाटन किया। जैन संस्कारक ज्ञानशाला संयोजक मालचंद भंसाली, ज्ञानशाला आंचलिक सह-संयोजक एवं जैन संस्कारक संजय पारख ने मंत्रोच्चार द्वारा पूजन करवाया।

साउथ हावड़ा सभा अध्यक्ष सुशील गीड़िया, मंत्री बसंत पटावरी, महिला मंडल मंत्री रेखा बैंगाणी, तेयुप अध्यक्ष बीरेंद्र बोहरा, ज्ञानशाला स्थानीय सह-संयोजिका अंजु चोरड़िया कार्यक्रम में उपस्थित थे।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
6 - 12 दिसंबर, 2021

✦ *विद्या से विनय मिले, यह तो जरूरी नहीं। विनय से विद्या शोभायमान होती है।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा के आसपास

❑ **आचार्य तुलसी** ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

ध्यान की पूर्व तैयारी

आलस्य, मैथुन, नींद, भूख और क्रोध–ये पाँच विकृतियाँ ऐसी है, जो सेवित होने पर बढ़ती रहती हैं। इनमें नींद भी एक है। इस संबंध में कुछ व्यक्तियों ने प्रयोग किया है। एक व्यक्ति निरंतर अधिक समय सोकर आठ-दस घंटे तक सो सकता है, निद्रा ले सकता है। आठ घंटा सोने वाला व्यक्ति अभ्यास करते-करते ऐसी स्थिति में पहुँच जाता है, जहाँ उसे दो-तीन घंटे की नींद से पूर्ण विश्राम मिल जाता है। निष्कर्ष यह निकलता है कि नींद को सहारा मिलने से वह बढ़ती है और संकल्प की दृढ़ता तथा नियमितता से वह कम हो सकती है। साधक के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वह नींद को बिलकुल कम कर दे, पर इतना तो जरूरी है ही कि वह चार बजे के आसपास नींद से छुटकारा पा ले। जिस साधक की चर्या का समय निश्चित नहीं होता, प्रारंभ में उसे चार बजे उठने में कुछ कठिनाई हो सकती है, पर आदत बदल जाने के बाद क्रम अपने आप ही बदल जाता है।

चार बजे का समय साधक के लिए बहुत महत्त्व का समय है। क्योंकि उस समय ऐसे परमाणुओं की वर्षा होती है, जो स्फूर्ति-उल्लास, आनंद और चेतना को विकसित करने वाले हैं। जागरण का यह समय स्वास्थ्य और ध्यान–दोनों ही दृष्टियों से उपयुक्त प्रतीत होता है।

प्रश्न : नींद से उठते ही ध्यान में बैठ जाना चाहिए या पहले और कुछ करना चाहिए?

उत्तर : जागरण के तत्काल बाद ध्यान में बैठा जा सकता है, पर ध्यान-काल में शरीर के किसी भी आवेश की बाधा नहीं रहनी चाहिए। इस दृष्टि से उठने के बाद शौचादि से निवृत्त होने को प्राथमिकता दी गई है। नित्य कर्म करने के बाद व्यक्ति नई ताजगी और स्फूर्ति का अनुभव करता है। इस स्थिति में आलस्य स्वयं दूर हो जाता है और मानस ध्यान के लिए तैयार हो जाता है। नींद टूटते ही बिछौने पर बैठे-बैठे ध्यान करने से निद्रा के परमाणुओं द्वारा आक्रमण की संभावना बनी रहती है इसलिए प्रातःकालीन आवश्यक कार्यों से निबटने के बाद ध्यान की तैयारी कर लेनी चाहिए। वैयक्तिक रूप से साधना करने वाले अकेले ही ध्यान में बैठते हैं, पर शिविर काल में सामूहिक रूप में ध्यान का अभ्यास करवाया जा सकता है।

प्रश्न : ध्यान का अभ्यास सामूहिक रूप में करना चाहिए या व्यक्तिगत रूप से?

उत्तर : प्राचीन काल में व्यक्तिगत ध्यान पर ही अधिक बल दिया जाता था। **'तओ झाएज्ज एगओ'** आदि आगम वाक्य इसी तथ्य को पुष्ट करने वाले हैं।

वर्तमान में अकेला व्यक्ति ध्यान नहीं कर सकता, ऐसा कोई नियम नहीं है। ध्यान के विशेष प्रयोग करने वाले तथा अपने घर, ऑफिस आदि में ध्यान करने वालों को बड़े समूह कहाँ मिलते हैं? फिर भी आजकल 'ग्रुप मेडिटेशन' का प्रयोग बहुत प्रचलित हो रहा है। नए सीखने वालों को शिविर-काल में कम-से-कम चार बार सामूहिक रूप से ध्यान करवाया जाता है। इसका एक कारण यह भी है कि समूह-ध्यान से वहाँ का पर्यावरण (एनवायरनमेंट) बदल जाता है। अकेला ध्यान करने वाला व्यक्ति दुर्लभ होता है और उसे उपयुक्त वातावरण नहीं मिलता है तो वह अपने मन को एकाग्र नहीं बन सकता। एक साथ अनेक व्यक्ति बैठते हैं, इससे प्राण शक्ति प्रबल हो जाती है। एक व्यक्ति की शक्ति दूसरे को प्राप्त हो सकती है। इस दृष्टि से सामूहिक ध्यान का विशेष मूल्य है।

ध्यान की तैयारी के लिए पहली अपेक्षा है–मुक्त मन या खाली दिमाग। मनुष्य अकेला होता है, उस समय भी वैचारिक दृष्टि से वह अकेला नहीं होता। उसके मस्तिष्क में विचारों का द्वंद्व चलता रहता है। मस्तिष्क का प्रभाव मन पर पड़ता है। मन में नए-नए संकल्प-विकल्प उठते रहते हैं। संकल्प-विकल्पों में उलझा हुआ मन ध्यान के योग्य नहीं होता। इसलिए संकल्पपूर्वक मन को खाली रखने का अभ्यास करना जरूरी है।

ध्यान की मुद्रा

खाली कर मस्तिष्क को, करना आसन-योग।
तन लाघव हित जो सहज, समुचित सफल प्रयोग।।
सुख से जो आसन सधे, साधे होकर शांत।
ऊर्ध्व-निषीदन-स्थान में, हो एकाग्र नितांत।।
पृष्ठरज्जु सीधी रहे, ईषत कुंचित गात।
अर्धनिमीलित नयन-युग, अंक मध्यगत हाथ।।

प्रश्न : ध्यान के लिए आसन, प्राणायाम आदि की भी कोई अपेक्षा है या केवल मन और मस्तिष्क को विचारों से खाली कर लेने पर ध्यान के अनुरूप स्थिति का निर्माण हो जाता है?

उत्तर : कोई भी साधना पद्धति एकांगी नहीं हो सकती। उसमें शरीर, मन और आत्मा–तीनों को साधने के उपक्रम बताए जाते हैं। क्योंकि तीनों परस्पर संबद्ध हैं और एक-दूसरे के प्रभाव से प्रभावित होते हैं। प्रेक्षाध्यान की साधना में तीन-गुप्तियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनमें सबसे पहली है–कायगुप्ति। कायगुप्ति अर्थात शरीर का गोपन करना, शरीर को साधना, शरीर पर नियंत्रण करने की क्षमता अर्जित करना। शरीर को साधे बिना वचन और मन को साधना कठिन है। क्योंकि शरीर इनमें सबसे अधिक स्थूल है। जो स्थूल है, वह सरलता से पकड़ में आ सकता है। ध्यान और कायोत्सर्ग के समय 'ठाणेणं मोणेणं झाणेणं' का जो क्रम है, वह भी पहले कायगुप्ति का संकेत करता है। आसन भी कायगुप्ति का ही एक प्रकार है।

ध्यान के समय किस आसन में बैठना चाहिए? यह एक प्रश्न है। इस संबंध में हमारा कोई आग्रह नहीं है। जो साधक जिस समय जिस आसन में सुखपूर्वक और सरलता से बैठ सके, उसके लिए वही आसन उपयुक्त है। फिर भी इस बात को नहीं भूलना चाहिए कि आसनों के नियमित और व्यवस्थित प्रयोग में जो निष्णात हो जाते हैं, उन्हें ध्यान करने में सुविधा रहती है। इस दृष्टि से ध्यान के लिए दो-चार आसन सुझाए जा सकते हैं, जैसे–अर्धपद्मासन, पद्मासन, वज्रासन, पालथी लगाकर बैठना आदि। ये सभी सुखासन हैं और ध्यान के लिए उपयोगी हैं।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा** ❑

(३७)

भाग्योदय हो गया विश्व का
शांतिदूत धरती पर आए
मूर्च्छित मानवता के खातिर
संजीवनी अणुव्रत लाए।।

भोर आज की है मनभावन
खुशियों से यह दामन भर दो
आस्था के उजले ये मोती
स्वीकृत करके आशीर्वर दो
नव प्रभात यह तुम्हें मुबारक
हम पैगाम शुभंकर पाएँ।।

आलंबन हो तुम अबलों के
असहायों के सबल सहारे
आगत और अनागत तुम ही
पुलक रहे हैं प्राण हमारे
जन्मोत्सव की मंगल वेला
गीत सुनाती दसों दिशाएँ।।

मन-मंदिर हर समय खुला है
बसी वहाँ पर मूर्ति तुम्हारी
अपने दिल में स्थान हमें दो
है अरसे से चाह हमारी
भरो माधुरी इन कंठों में
गीत तुम्हारे जीभर गाएँ।।

नए-नए सपने संजोकर
गौरवमय इतिहास बनाया
युग की जटिल समस्याओं को
समाधान का पथ दिखलाया
है जीवन अभिराम तुम्हारा
पल-पल सफल प्रेरणा पाएँ।।

(३८)

महक उठे जीवन का मधुवन
कविवर! ऐसा गीत सुनाओ
चहक उठे प्राणों का पंछी
मन को ऐसा मीत बताओ।।

सपनों की दुनिया में जीती
कैसे सच से नाता जोड़ूँ
है प्रकाश की प्यास बहुत पर
कैसे तम का पल्ला छोड़ूँ?
तुम ही कोई राह दिखाओ।।

ऊपर से देखा जीवन को
कैसे परिचय हो यथार्थ से
मन को किस खूँटी पर बाँधूँ
जो है अनुबंधित पदार्थ से
तुम कोई तकनीक सुझाओ।।

भरा धुँधलका इन आँखों में
कैसे सुंदर चित्र बनाऊँ?
नहीं कुशल व्यवहार अगर तो
कैसे पर को मित्र बनाऊँ?
तुम ही समाधान बन जाओ।।

जहाँ देखती तुम ही तुम हो
और नहीं कुछ भी दिखता है
हो चाहे दुनिया सतरंगी
मुझको तो नीरस सिकता है
जीवन-जड़ में रस पहुँचाओ।।

कौन कहाँ से आए हो तुम
किस अभिधा से तुम्हें पुकारूँ
कामकुंभ सुरगिरि या सुरतरु
या तुम-सा तुमको स्वीकारूँ
इस उलझन को दूर भगाओ।।

(क्रमशः)

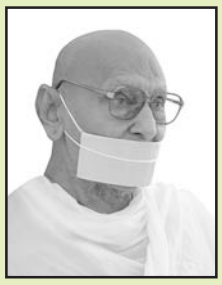

संबोधि

❑ **आचार्य महाप्रज्ञ** ❑

आज्ञावाद

भगवान् प्राह

(२५) आत्मशुद्ध्यै भवेदाद्यो, देशितः स मया ध्रुवम्।
समाजस्य प्रवृत्त्यर्थं, द्वितीयो वर्त्यते जनैः।।

आत्मिकधर्म आत्मशुद्धि के लिए होता है इसलिए मैंने उसका उपदेश किया है। लौकिकधर्म समाज की प्रवृत्ति के लिए होता है। उसका प्रवर्तन सामाजिक जनों के द्वारा किया जाता है।

(२६) आत्मधर्मो मुमुक्षूणां, गृहिणाञ्च समो मतः।
पालनापेक्षया भेदो, भेदो नास्ति स्वरूपतः।।

आत्म-धर्म साधु और गृहस्थ—दोनों के लिए समान है। धर्म के जो विभाग हैं, वे पालन करने की अपेक्षा से किए गए हैं। स्वरूप की दृष्टि से वह एक है, उसका कोई विभाग नहीं होता।

(२७) पाल्यते साधुभिः पूर्णः, श्रावकैश्च यथाक्षमम्।
यत्र धर्मो हि साधूनां, तत्रैव गृहमेधिनाम्।।

साधु आत्म-धर्म का पूर्ण रूप से पालन करते हैं और श्रावक उसका पालन यथाशक्ति करते हैं। संयममय आचरण साधु के लिए भी धर्म है, गृहस्थ के लिए भी धर्म है। असंयममय आचरण साधु के लिए भी धर्म नहीं है, गृहस्थ के लिए भी धर्म नहीं है।

अहिंसा गृहस्थ के लिए धर्म हो और साधु के लिए अधर्म अथवा साधु के लिए धर्म हो और गृहस्थ के लिए अधर्म, ऐसा कभी नहीं होता। तात्पर्य यही है कि गृहस्थ का धर्म साधु के धर्म से भिन्न नहीं किंतु उसी का एक अंश है।

मुनि और गृहस्थ दोनों का धर्म एक है। अंतर इतना ही है कि मुनि धर्म का पूर्ण रूप से पालन करते हैं और गृहस्थ उसका आंशिक रूप में। धर्म के विभाग व्यक्ति-व्यक्ति की पालन करने की शक्ति के आधार पर किए गए हैं। उनमें स्वरूपभेद नहीं, मात्राभेद होता है। मुनि अहिंसा का पूर्ण व्रत स्वीकार करते हैं और गृहस्थ अपने सामर्थ्य के अनुसार उसका पालन करते हैं। यही धर्म के विभिन्न रूपों का आधार है।

(२८) तीर्थंकरा अभूवन् ये, विद्यन्ते ये च सम्प्रति।
भविष्यन्ति च ते सर्वे, भाषन्ते धर्ममीदृशम्।।

जो तीर्थंकर अतीत में हुए, जो वर्तमान में हैं और जो भविष्य में होंगे, वे सब ऐसे ही धर्म का निरूपण करते हैं।

(२९) सर्वे जीवा न हन्तव्याः कार्या पीडापि नाल्पिका।
उपद्रवों न कर्तव्यो, नाऽऽज्ञाप्या बलपूर्वकम्।।
(३०) न वा परिगृहीतव्या, दासकर्मनियुक्तये।
एष धर्मो ध्रुवो नित्यः, शाश्वतो जिनदेशितः।। (युग्मम्)

कोई भी जीव हंतव्य नहीं है, न उन्हें किंचित् पीड़ित करना चाहिए, न उपद्रव करना चाहिए, न बलपूर्वक उन पर शासन करना चाहिए और न दास बनाने के लिए उन्हें अपने अधीन रखना चाहिए—यह अहिंसा-धर्म ध्रुव, नित्य, शाश्वत और वीतराग के द्वारा निरूपित है।

(३१) न विरुध्येत केनापि, न बिभियान्न भापयेत्।
अधिकारान्न मुष्णीयाद्, न कुर्याद् श्रमशोषणम्।।

किसी के साथ विरोध न करे, न किसी से डरे और न किसी को डराए, न किसी के अधिकरों का अपहरण करे और न किसी के श्रम का शोषण करे।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ **मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'** ❑

(३) चारित्र मार्ग

प्रश्न-१० : क्या चारित्र की प्राप्ति तीर्थ स्थापना के बाद होती है?
उत्तर : तीर्थ स्थापना के बाद पाँच ही चारित्र हो सकते हैं। तीर्थ स्थापना से पूर्व सामायिक, सूक्ष्म संपराय व यथाख्यात—इन तीन चारित्र की प्राप्ति हो सकती है।

प्रश्न-११ : क्या चारित्र सवेदी है?
उत्तर : सामायिक व छेदोपस्थापनीय सवेदी व अवेदी दोनों हैं। दोनों में वेद तीन ही हैं। परिहार विशुद्धि सवेदी-वेद-२ पुरुष व कृतनपुंसक।

प्रश्न-१२ : चारित्र सरागी है या वीतरागी?
उत्तर : प्रथम चार चारित्र सरागी व यथाख्यात वीतरागी हैं। वे उपशम व क्षीण वीतरागी होते हैं।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ **आचार्य महाश्रमण** ❑

आचार्य वज्रस्वामी

(क्रमशः) माँ का आशीर्वाद प्राप्त कर दूसरे दिन प्रातःकाल होते ही आर्यरक्षित ने इक्षुवाटिका की ओर प्रस्थान कर दिया। नगर के बहिर्भूभाग में उसे पिता का मित्र वृद्ध ब्राह्मण मिला। उसके हाथ में नौ इक्षुदंड पूर्ण थे। दसवाँ आधा था। इक्षु का यह उपहार लेकर वह आर्यरक्षित से मिलने ही आ रहा था। संयोगवश मित्रपुत्र को मार्ग के मध्य में ही पाकर वह प्रसन्न हुआ। आर्यरक्षित ने उनका अभिवादन किया। पिता-मित्र वृद्ध ब्राह्मण ने भी प्रीति-वश उसे गाढ़ आलिंगन में बाँध लिया। आर्यरक्षित ने कहा—'मैं अध्ययन करने के लिए जा रहा हूँ। आप मेरे बंधुजनों की प्रसन्नता के लिए उनसे घर पर मिलें।' आर्यरक्षित ने अनुमान लगाया—इक्षुवाटिका की ओर जाते हुए मुझे सार्ध नौ इक्षुयष्टिका का उपहार मिला। इस आधार पर मुझे दृष्टिवाद ग्रंथ के सार्ध नौ परिच्छेदों की प्राप्ति होगी, इससे अधिक नहीं।

उल्लास के साथ रक्षित इक्षुवाटिका में पहुँचा। ढड्ढ़र श्रावक को वंदन करते देख उन्होंने उसी भाँति आर्य तोषलिपुत्र को वंदन किया। श्रावकोचित क्रियाकलाप से अज्ञान नवागंतुक व्यक्ति को विधियुक्त वंदन करते देख आर्य तोषलिपुत्र ने पूछा—'वत्स! तुमने यह विधि कहाँ से सीखी?' रक्षित ने ढड्ढ़र श्रावक की ओर संकेत किया और अपने आने का प्रयोजन भी बताया। आर्य तोषलिपुत्र ने ज्ञानोपयोग से जाना—'श्रीमद् वज्रस्वामी के बाद यह बालक प्रभावी होगा।' नवागंतुक विद्वान् रक्षित को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा—'दृष्टिवाद का अध्ययन करने के लिए मुनि बनना आवश्यक है।' रक्षित में ज्ञानपिपासा प्रबल थी। वह श्रमण-दीक्षा स्वीकार करने के लिए उद्यत हुआ। आर्य तोषलिपुत्र ने संयम-मार्ग पर बढ़ने के लिए उत्सुक रक्षित को वी०नि० ५४४ (वि० ७४, ई० १७) में भागवती दीक्षा प्रदान की। दीक्षा लेने के बाद मुनि रक्षित ने निवेदन किया—गुरुदेव! मैं राजपुरोहित सोमदेव का पुत्र हूँ। राजपुरोहित-पुत्र होने के कारण दशपुर-नरेश उदायन का और वहाँ के नागरिक बंधुओं का मेरे प्रति विशेष अनुराग है। मेरे प्रायः पारिवारिक जन जैन संस्कारों से अनभिज्ञ हैं। उनका मोहानुबंध भी अत्यंत सघन है। मेरे मुनि बनने की बात ज्ञात होने पर राजा के द्वारा अथवा पारिवारिकजनों द्वारा बलपूर्वक मुझे घर ले जाने का उपक्रम किया जा सकता है। प्रभो! मेरे कारण किसी प्रकार से जैनशासन की अवमानना न हो अतः आप शीघ्र ही किसी दूसरे क्षेत्र में प्रस्थान कर दें। यही मेरे लिए व आपके लिए श्रेयस्कर है।

नवदीक्षित मुनि के निवेदन पर आर्य तोषलिपुत्र ने इक्षुवाटिका से अन्यत्र विहार कर दिया। मुनि रक्षित में आगमों के अध्ययन की तीव्र उत्कंठा थी। आर्य तोषलिपुत्र ने नवदीक्षित मुनि रक्षित को एकादश आगमों का प्रशिक्षण दिया एवं दृष्टिवाद आगम का आंशिक अध्ययन करवाया। अग्रिम अध्ययन के लिए उन्होंने मुनि रक्षित को वज्रस्वामी के पास भेजा।

गुरु-आज्ञा शिरोधार्य कर मुनि रक्षित वहाँ से चले। मार्गान्तरवर्ती अवन्तीनगर में आचार्य भद्रगुप्त से उनका मिलन हुआ। वार्तालाप के प्रसंग में मुनि रक्षित ने कहा—मैं अवशिष्ट दृष्टिवाद का अध्ययन करने के लिए आर्य वज्रस्वामी के पास जा रहा हूँ। आचार्य भद्रगुप्त वज्रस्वामी के विद्यागुरु थे। उन्होंने मुनि रक्षित को स्नेह प्रदान करते हुए कहा—'रक्षित! पूर्वों को पढ़ने की तुम्हारी अभिलाषा प्रशंसनीय है। तुम्हारा यहाँ आना उचित समय पर हुआ है। मेरी मृत्यु निकट है। अनशन की स्थिति में तुम मेरे पास रहकर सहायक बनो। कुलीन व्यक्तियों का यही कर्तव्य होता है।' आचार्य भद्रगुप्त का निर्देश पाकर मुनि रक्षित ने प्रसन्न मन से स्वयं को सेवा में समर्पित कर दिया। परम समाधि में लीन और अनशन में स्थित आर्य भद्रगुप्त ने एक दिन प्रसन्न मुद्रा में कहा—'मैं तुम्हारी सेवा से प्रसन्न हूँ। तुम्हारी परिचर्या से मुझे क्षुधा एवं तृष्णा का परीषह भी अनुभूत नहीं हुआ। मैं तुम्हें एक मार्गदर्शन दे रहा हूँ—तुम वज्रस्वामी के पास पढ़ने के लिए जाओ, पर भोजन एवं शयन की व्यवस्था अपनी पृथक् रखना। क्योंकि आर्य वज्र की जन्म-कुंडली का योग है कि जो भी नवागंतुक व्यक्ति उनकी मंडली में भोजन करेगा और आर्य वज्रस्वामी के पास रात्रि-शयन करेगा, वह उनके साथ पंचत्व को प्राप्त होगा। तुम शासन के प्रभावक आचार्य बनोगे, संघोद्धारक बनोगे अतः यह निर्देश मैं तुम्हें दे रहा हूँ।'

(क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
6 - 12 दिसंबर, 2021

✦ *क्रोध करना बड़ी बात नहीं होती, उस पर नियंत्रण करना अच्छी बात होती है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

ज्ञानशाला के विविध आयोजन

ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव

विजयनगर।

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया। ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा मंगलाचरण हुआ। साध्वीश्री जी ने कहानी के माध्यम से सरल ढंग से अभिभावक और बच्चों के रिश्ते की गहराई को समझाया। उन्होंने कहा कि बाप की डाँट एक अमृत का घूँट होती है।

कार्यक्रम में आंचलिक संयोजक माणक संचेती, विजयनगर सभा के उपाध्यक्ष राकेश दुधोड़िया, सभा मंत्री मंगल कोचर, ज्ञानशाला प्रायोजक उमेद नाहटा, महिला मंडल अध्यक्षा प्रेम भंसाली और मंत्री सुमित्रा बरड़िया उपस्थित रहे। इस वर्ष जो भी प्रतियोगिताएँ हुई सभी बच्चों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में लगभग ७० परिवारों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन मधु बेगवानी ने किया।

ज्ञानशाला का दीपावली मिलन समारोह

टिटिलागढ़।

टिटिलागढ़, ज्ञानशाला परिवार ने दीपावली मिलन समारोह मनाया। सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र तथा प्रशिक्षिका सुभद्रा जैन के स्वरचित गीत के संगान से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। बच्चों ने सुंदर रंगोली बनाई, जिसमें प्रथम स्थान पर रही प्रांजल जैन, द्वितीय पर पावनी और रिद्धि जैन तथा तृतीय स्थान पर झिलमिल और पलक जैन रही। स्पीच कंपिटीशन में प्रथम पावनी जैन, द्वितीय रिद्धि जैन तथा तृतीय स्थान पर झिलमिल जैन रही। बच्चों को पुरस्कृत किया गया। ज्ञानशाला संयोजिका कृष्णा जैन ने दीपावली क्यों मनाते हैं, विस्तार से बच्चों को समझाया।

ज्ञानशाला का दीपावली मिलन समारोह

गुवाहाटी।

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में संचालित ज्ञानशाला में दीपावली मिलन समारोह का आयोजन रखा गया। जिसमें लगभग १२५ बच्चों व २५ प्रशिक्षिकाओं की उपस्थिति रही। सभा के कार्यकारिणी सदस्य अजय भंसाली, ज्ञानशाला संयोजक अरुण बोथरा, मुख्य प्रशिक्षिका कोकिला सुराणा की उपस्थिति में संयोजिका नेहा संचेती द्वारा नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। ज्ञानशाला संयोजक अरुण बोथरा ने दीपावली के संदर्भ में बताया कि तीर्थंकर भगवान महावीर का निर्वाण अमावस्य तिथि में हुआ, तब गहन अंधकार था। जनसमूह ने दीप प्रज्ज्वलन कर जगत को प्रकाशमय किया तब से दीपावली मनाई जा रही है।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में ऑनलाइन ज्ञानशाला में हुई सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। प्रशिक्षिका राखी बैंगाणी, एकता बोथरा, रूपा गोलछा ने पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम किया। प्रशिक्षिका सुमिता बरड़िया व लीला छाजेड़ द्वारा खेलकूद का आयोजन किया गया। जिसमें विजेता बच्चों को पुरस्कृत किया गया। तेरापंथ सभा द्वारा कार्यक्रम में ज्ञानशाला के बच्चों के द्वारा तुलसी अष्टकम का संगान किया गया। प्रशिक्षिका इंदू डागा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। मंगलपाठ से कार्यक्रम का समापन प्रशिक्षिका शायर देवी सिंघी ने किया।

भिक्षु भक्ति का आयोजन

दक्षिण मुंबई।

महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल में भव्य भिक्षु भक्ति का कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम में शासनश्री साध्वी विद्यावती जी ने कहा कि संगीत एक ऐसी कला है जो अपने भीतर एक नई स्फूर्ति का संचार करती है। श्रावक अगर मधुर स्वर वाला हो तो संगीत में चार-चाँद लगा देता है।

इस अवसर पर आचार्य महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउंडेशन के अध्यक्ष किशनलाल डागलिया, स्थानीय तेरापंथ सभा के अध्यक्ष गणपतलाल डागलिया एवं मुंबई तेरापंथी सभा के अध्यक्ष नरेंद्र तातेड़ ने क्रमशः स्वागत वक्तव्य एवं शुभकामनाएँ प्रेषित की। मधुर गायक सूरत से समागत निलेश बाफना ने गीतों का एक से बढ़कर एक सुंदर मनमोहक प्रस्तुति दी।

निलेश बाफना ने गीत का संगान किया। स्थानीय तेरापंथ सभा-संस्थाओं द्वारा निलेश बाफना को स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। जिसका वाचन तेयुप उपाध्यक्ष नितेश धाकड़ ने किया। आभार ज्ञापन तेयुप के अध्यक्ष पूरण चपलोत ने किया। संचालन तेरापंथ सभा के मंत्री दिनेश धाकड़ ने किया। इस अवसर पर कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। नगरसेवक आकाश पुरोहित ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

ज्ञान पंचमी को सिखाया ज्ञान अभिवृद्धि के गुर

गदग।

तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी पद्मावती जी के सान्निध्य में ज्ञान पंचमी का कार्यक्रम मनाया गया। शासनश्री साध्वी पद्मावती जी ने कहा कि अपने जीवन को रोशनी से आलोकित करने का यह अच्छा साधन है। अपने भीतर ज्ञान का दीपक जल सके इसका यह अच्छा साधन है। भगवान महावीर ने कहा—अज्ञानता को ज्ञान में बदलने के लिए जैन धर्म के बहुत से अनुयायी आज से ज्ञान के क्षयोपक्षम के लिए साधना शुरू करते हैं।

डॉ० साध्वी गवेषणा जी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। साध्वी मयंकप्रभा जी ने बताया कि जीवन निर्वाण हेतु ज्ञान का संग्रह जरूरी है। साध्वी मेरुप्रभा जी ने गीतिका प्रस्तुत की। रात्रि कार्यक्रम में ज्ञानशाला के बच्चों की स्मृति विकास वह ज्ञानवर्धक प्रयोग करवाते हुए ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपक्षम कैसे करें, इसके टिप्स बताए। लगभग ४० बच्चों ने भाग लिया। तेरापंथ समाज की ओर से जितेंद्र जीरावला, विजेता भंसाली, सारिका संकलेचा, सीमा कोठारी, शोभा संकलेचा द्वारा बच्चों को पुरस्कृत किया गया।

जीवन-विज्ञान दिवस का आयोजन

राजलदेसर।

साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में जीवन-विज्ञान दिवस मनाया गया। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया एवं महिला मंडल की अध्यक्षा प्रेम देवी विनायकिया, रीना बैद एवं आरती बैद ने अणुव्रत गीत प्रस्तुत करते हुए मंगलाचरण किया। कार्यक्रम में श्रीराम उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों एवं श्रावक-श्राविकाओं को कहा वर्तमान युग में जीवन-विज्ञान की परम आवश्यकता है। जो जीने की कला सिखाता है, वह जीवन-विज्ञान कहलाता है। आचार्यश्री तुलसी की दूरदृष्टि से इस पद्धति का आविर्भाव हुआ। मुनि नथमल जी (आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी) को प्रदत्त 'महाप्रज्ञ' अलंकरण दिवस को जीवन-विज्ञान दिवस मनाया जाता है।

उन्होंने कहा कि प्रामाणिकता, नैतिकता, अनुशासन और मैत्री के द्वारा चरित्र उज्ज्वल होगा, जीवन का सर्वांगीण विकास हो सकता है। जीवन-विज्ञान सर्वांगीण शिक्षा परक पद्धति है। नैतिक मूल्यों के विकास का आधार हैं जीने की एक विशेष कलात्मक पद्धति है।

साध्वी मुक्ताप्रभा जी ने बच्चों को स्मण शक्ति के विकास हेतु महाप्राण ध्वनि, दीर्घ श्वासप्रेक्षा, शशांक आसन, ध्यान आदि के विभिन्न प्रयोग करवाए। श्रीराम उ०मा० विद्यालय के व्यवस्थापक भुवनेश्वर शर्मा ने साध्वीश्री जी द्वारा दी गई अनमोल प्रेरणा पर चलने का संकल्प व्यक्त किए।

अणुव्रत समिति के अध्यक्ष शंकरलाल सोनी ने अपने विचार रखे। अंत में उन्होंने श्रीराम विद्यालय के विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं का आभार प्रकट किया।

इस अवसर पर डॉ० साध्वी परमयशा जी, साध्वी विनम्रयशा जी, साध्वी धर्मयशा जी, साध्वी मुक्ताप्रभा जी एवं साध्वी कुमदप्रभा जी ने बच्चों को प्रेरित करते हुए संयुक्त रूप से गीत का सुमधुर गान किया। तेरापंथी सभा की तरफ से विद्यालय के शिक्षकों का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। संचालन अशोक बैद ने किया। कार्यक्रम में १२५ बच्चे एवं शिक्षकगण तथा व्यवस्थापक मौजूद थे।

एकाह्निक तुलसी-शतकम्

मुनि सिद्धकुमार

(क्रमशः)

रचना संसार

(६६) 'आत्मा के आसपासे' ति, कृतिरध्यात्मपूरिता।
अवश्यपठनीयाप्यस्त्यात्मस्मृतिः स्वकस्मृतिः।।
आपकी कृति 'आत्मा के आसपास' एक अध्यात्मरस से पूरित, अवश्य पठनीय रचना है, क्योंकि अपनी मूल अस्तित्व की स्मृति ही आत्मा की स्मृति है।

(६७) ते कोऽपि मित्रदेवः किं, तस्य विना प्रनीयते।
कालूयशोविलासस्य, रचना नन्वसंभवा।।
गुरुदेव! मुझे लगता है कि जरूर आपका कोई मित्रदेव है अन्यथा कालूयशोविलास जैसी रचना असंभव प्रतीत होती है।

(६८) कोविदेनोद्यते सुष्ठु, रचनामवलोक्य यत्।
भवति शतवर्षेषु, रचनैषा कदा कदा।।
विद्वानों ने इस रचना का अवलोकन कर कहा कि ऐसी कृति तो शताब्दियों में कभी-कभी बनती है।

(६९) कालुयशोविलासस्य, ह्यनुभवन्ति पाठकाः।
कालुजीवनयात्रायाः, सन्ति प्रत्यक्षसाक्षिनः।।
कालूयशोविलास के पाठक ऐसा अनुभव करते हैं कि वे मानो कालूगणी के जीवनयात्रा के प्रत्यक्ष साक्षी हैं।

(७०) भरताधारिते काव्ये, भरतमुक्तिनामके।
अध्यात्मस्य ह्यनासक्त्या, निदर्शनं कृतं त्वया।।
आपने चक्रवर्ती भरत आधारित काव्य में, जिसका नाम है भरत-मुक्ति, उसमें अध्यात्म और अनासक्ति का सुंदर निदर्शन किया है।

(७१) यथाऽऽहारेषु क्षैरेयी, चास्ति संपूर्णखादनम्।
तथा दर्शनशास्त्रेषु, जैनसिद्धान्तदीपिका।।
जैसे आहारों में खीर संपूर्ण भोजन है, वैसे ही दर्शन-शास्त्रों में स्थान है जैन सिद्धान्त दीपिका का।

(७२) कृतं सरलपद्धत्या, श्रीभिक्षुन्यायकर्णिका।
जैनन्यायपिपासुभ्यस्तर्कशास्त्रनिरूपणम्।।
सरल-सुंदर पद्धति से रचित श्रीभिक्षुन्यायकर्णिका जैन-न्याय के पिपासुओं के लिए तर्क-शास्त्र का विवेचन है।

(७३) मानसस्यातिचाञ्चल्यं, महासङ्कटकारणम्।
तन्निवारणहेतुश्च, कृतं मनोऽनुशासनम्।।
मन का अति चाञ्चल्य महा संकट का कारण हो सकता है। उसके निवारण हेतु है आपकी रचना मनोऽनुशासनम्।

(७४) त्वया मन्त्रिमुनीशस्वकानन्यसहयोगिनः।
श्रीमगनचरित्रेण, कृतं सजीवचित्रणम्।।
आपने मगन-चरित्र द्वारा अपने अनन्य सहयोगी मंत्री मुनिश्री मगनलालजी स्वामी का सजीव चित्रण किया।

(७५) पूज्यडालं कदापीति, गुरो! भवान् न दृष्टवान्।
श्रीडालिमचरित्रस्य, रचनाभकरोद् कथम्।।
गुरुदेव! आपने तो पूज्य डालगणी को कभी देखा ही नहीं, फिर डालिम-चारित्र की रचना कैसे?

(७६) स्वपदेन समं सर्वा, इत्थमेव प्रतीयते।
अनुभूतीर्गुरुः स्थानन्तरितमकरोत्त्वयि।।
ऐसा लगता है गुरु कालुगणी ने अपने पद के साथ सारी अनुभूतियों को भी आपमें स्थानांतरित कर दिया।

(७७) भवता रचितं काव्यं, श्रीमाणकचरित्रकम्।
शोणोपलाधिकं मूल्यसम्पन्नं सर्वदृष्टिभिः।।
आपके द्वारा रचित काव्य माणकचरित्र सभी दृष्टियों से माणक से भी अधिक मूल्यसंपन्न है।

(शेष अगले अंक में)

✦ *चौबीस घंटे में दो घंटे का समय भी अगर शुभ योग में बोते तो इसे एक उपलब्धि मानना चाहिए।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
6 - 12 दिसंबर, 2021

आचार्यश्री तुलसी के १०८वें जन्म दिवस के विविध आयोजन

आचार्य तुलसी जन्म दिवस समारोह

खेड़ब्रह्मा।

शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी के सान्निध्य में गुरुदेवश्री तुलसी के जन्म दिवस पर अणुव्रत दिवस पर एक कार्यक्रम के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम नवकार महामंत्र से प्रारंभ हुआ। मंगलाचरण तुलसी अष्टकम द्वारा साध्वी ध्यानप्रभा जी ने किया। सभाध्यक्ष शंकर जैन ने गुरुदेव के जीवन पर प्रकाश डाला। साध्वी श्रुतप्रभा जी एवं साध्वी यशस्वीप्रभा जी ने गुरुदेव तुलसी के अपने जीवन के संस्मरण बताए। जतन देवी छाजेड़ ने मधुर गीतिका प्रस्तुति की। ऋषभ छाजेड़ ने भी पहली बार माइक पर बोलकर अच्छी प्रस्तुति दी।

शासनश्री सत्यप्रभा जी ने बताया कि तेरापंथ धर्मसंघ में अणुव्रत के प्रवर्तक, जीवन विज्ञान के प्रदाता आचार्यश्री तुलसी थे। उनकी लंबी-लंबी यात्राएँ हुईं। आपके अवदानों का जन-जन तक विस्तार से प्रचार हुआ। आपने अनुशासन को व साध्वी शिक्षा को खूब प्रोत्साहन दिया और उसे कामयाब भी बनाया। कार्यक्रम का संचालन सभा के कोषाध्यक्ष विपिन पीतलिया ने किया। मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

अणुव्रत अपने से अपना अनुशासन है

ज्ञानबाग कॉलोनी।

अणुव्रत आंदोलन के सूत्रधार आचार्यश्री तुलसी के प्रति आस्था की अभिव्यक्ति है अणुव्रत दिवस समारोह। आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत के मंच से संप्रदायातीत धर्म का घोष गुंजाया। उनका एक ही आह्वान था—इंसान पहले इंसान, फिर हिंदू या मुसलमान। ये उद्गार साध्वी निर्वाणश्री जी ने अणुव्रत दिवस समारोह में प्रकट किए।

समारोह में साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी मानवता के मसीहा थे। अणुव्रत रूपी मानव धर्म के माध्यम से उन्होंने मानवता की अपार सेवा की।

मुख्य अतिथि किम्स हॉस्पीटल के थोरासिक ऑरगन ट्रांसप्लांटेशन के डायरेक्टर डॉ० संदीप अत्तावर ने आचार्यश्री तुलसी के चरणों में श्रद्धा का अर्घ्य समर्पित करते हुए आचार्यश्री महाश्रमण, महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री जी के प्रति श्रद्धा समर्पित की। उन्होंने साध्वीश्री जी एवं साध्वीवृंद के प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

विशेष अतिथि महेश, बैंक के चेयरमैन रमेश बंग ने गुरुदेव तुलसी के अवदानों की अभिव्यक्ति दी। प्रसिद्ध समाजसेवी अमृत कुमार जैन, डॉ० पिंकु संदीप अत्तावर एवं डॉ० धर्मेश सिंघी ने साध्वीश्री के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। स्वतंत्र वार्ता के संपादक डी०पी० सिंह ने अपने भाव व्यक्त किए।

कार्यक्रम का शुभारंभ मंगल मंत्रोच्चार से साध्वीश्री जी द्वारा हुई। कन्या मंडल की कन्याओं ने गीत की प्रस्तुति दी। साध्वीवृंद ने समवेत स्वरों में आचार्यश्री तुलसी की अभ्यर्थना की। अणुव्रत समिति की उपाध्यक्ष सरोज भंडारी के नेतृत्व में बहनों ने गीत का संगान किया।

अभिव्यक्ति के क्रम में प्रकाश भंडारी, प्रेम देवी पारख, प्रमोद भंडारी ने आचार्यश्री तुलसी के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर प्रकाश डाला। अणुव्रत समिति के सहमंत्री व कार्यक्रम के संयोजक विजयराज आंचलिया ने आभार प्रकट किया। इस अवसर पर सम्मानित अतिथि रमेश बंग, डॉ० डी०पी० सिंह, डॉ० पिंकु अचावर, डॉ० धर्मेश सिंघी, डॉ० अनुज पटेल का साहित्य व अणुव्रत दुपट्टे से स्वागत किया गया। मुख्य अतिति डॉ० संदीप को उनकी सेवाओं एवं ३०० से अधिक हार्ट व लंग्स ट्रांसप्लांट के लिए स्मृति चिह्न व साहित्य से नवाजा गया। इस अवसर पर समिति ने ज्ञानबाग कॉलोनी के कार्यकर्ताओं—प्रमोद भंडारी, आसकरण सेठिया, पवन जम्मड़, ऋषभ मेहता, मयूर बोरड़ आदि का अणुव्रत प्रतीक से सम्मान किया गया।

इस अवसर पर अणुव्रत समिति द्वारा आयोजित पोस्टर प्रतियोगिता के संभागियों को कंचन देवी जयसिंह, नीरज सुराणा ने सम्मानित किया।

तुलसी यशोगाथा

गांधीनगर।

तेरापंथ भवन में साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में 'तुलसी यशोगाथा' गुरु तुलसी का जन्मदिन हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। साध्वी लावण्यश्री जी ने कहा कि तुलसी ने अपने आत्मबल, मनोबल, संकल्पबल से तेरापंथ धर्मसंघ को सजाया-संवारा, गण के भंडार को भरा। साधु-साध्वियों का निर्माण, श्रावक-श्राविकाओं का उत्थान, पारमार्थिक शिक्षण संस्था, समण श्रेणी व विसर्जन का सूत्र आदि अनेकों आयाम आत्मोत्थान के दिए।

साध्वी सिद्धांतश्री जी ने कहा कि गुरु तुलसी में शहद जैसी मिठास थी, केसर जैसी लोकप्रियता, फूल जैसी कोमलता, बसंत जैसी बहार थी। जो भी उनकी शरण में आया वो उनका बन जाता।

साध्वी दर्शितप्रभा जी ने गुरुदेव तुलसी की सत्यवादिता, भलाई, लोकप्रियता, सहिष्णुता, शिक्षा एवं साधना की विलक्षण यात्रा की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में प्रेक्षा संगीत सुधा, प्रज्ञा संगीत सुधा ने सुमधुर संगीत प्रस्तुत किया।

तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुरेश दक, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष शांतिलाल पोरवाल, महिला मंडल अध्यक्षा स्वर्णमाला पोखरणा, महासभा से कैलाश बोराणा, टीपीएफ प्रधान ट्रस्टी एम०सी० बलदोटा,तेरापंथ ट्रस्ट उपाध्यक्ष माणकचंद मूथा, अणुव्रत विश्व भारती संगठन मंत्री कन्हैयालाल चिप्पड़, तेयुप बैंगलोर अध्यक्ष विनय बैद ने अपने वक्तव्य द्वारा श्रद्धा अर्पित की।

ज्ञानशाला की ओर से अथक कहानी तुलसी की, बनी जुबानी हम सबकी' प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री नवनीत मूथा ने किया व आभार ज्ञापन सभा सहमंत्री राजेंद्र बैद ने किया। इस अवसर पर अनेक पदाधिकारीगण व गणमान्य जन उपस्थित रहे।

श्रीरूपांतरण एक्सप्रेस कार्यशाला का आयोजन

विजयनगर।

तेरापंथ सभा भवन में साध्वी प्रमिला कुमारी जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। साध्वीश्री जी द्वारा महावीर अष्टकम का संगान किया गया। साध्वी प्रमिला कुमारी जी ने कहा कि आज से ढाई हजार वर्ष पहले भगवान महावीर ने अहिंसा अपरिग्रह अनेकांत का सिद्धांत दिया था। अनेकांत का सिद्धांत आज भी उतना ही उपयोगी है जितना पहले था और हमेशा रहेगा।

महिला मंडल की अध्यक्षा प्रेम भंसाली ने अनेकांतवाद और श्रीरूपांतरण एक्सप्रेस पर अपने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल की बहनों द्वारा मधुर स्वरों में मंगलाचरण किया गया।

आभार व्यक्त मंत्री सुमित्रा बरड़िया ने किया। कार्यक्रम का संचालन संयोजिका अनीता जीरावाला ने किया। कार्यक्रम में कर्नाटक प्रभारी मधु कटारिया, सभा मंत्री मंगल कोचर, महिला मंडल परामर्शक मधु सेठिया, मंडल की सभी पदाधिकारी व कार्यकर्ता बहनों के साथ श्रावक-श्राविका समाज उपस्थित थे।

मंगलभावना समारोह के आयोजन

बोलाराम

साध्वी काव्यलता जी के तेरापंथ भवन में चातुर्मास की समाप्ति पर मंगलभावना का कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण के द्वारा ज्ञानशाला के मधु कातरेला, इंदु कातरेला एवं चंद्रा कातरेला ने किया। मंगलभावना प्रेषित करने वालों में सिकंदराबाद सभा अध्यक्ष सुरेश सुराणा, सहमंत्री राकेश सुराणा, तेरापंथ सभा कोषाध्यक्ष संजय सुराणा, अणुव्रत समिति उपाध्यक्ष अनिल कातरेला, टीपीएफ हैदराबाद कोषाध्यक्ष पंकज संचेती, सिकंदराबाद महिला मंडल के उपाध्यक्ष सरला मेहता सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों तथा साध्वीश्री सुरभिप्रभा जी के संसारपक्षीय भाई राजीव दुगड़ ने अपनी भावनाएँ प्रस्तुत की। गायिका प्रेरणा सुराणा ने सुमधुर प्रस्तुति द्वारा अपनी मंगलभावना प्रेषित की।

साध्वी ज्योतियशा जी एवं साध्वी सुरभिप्रभा जी ने गीतिका के माध्यम से अपनी भावनाएँ रखी। बालोतरा सभा अध्यक्ष रतन सुराणा एवं महिला मंडल अध्यक्षा दमयंती सुराणा ने भी साध्वीवृंद के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

साध्वी काव्यलता जी ने चातुर्मास संपन्नता पर गुरुदेव महाश्रमण जी के प्रति अनंत-अनंत कृतज्ञता ज्ञापित की एवं मुनि घांसीराम एवं साध्वी गोरांजी को याद करते हुए कहा कि इस सफलतम चातुर्मास में आशीर्वाद रूपी शक्ति इनसे मिली। साध्वी मधुस्मिता जी को भी याद किया। साध्वी काव्यलता जी ने कहा कि इस बार हैदराबाद को चार चातुर्मास मिले और सभी श्रावकों ने इसका भरपूर लाभ लिया एवं अच्छी धर्म प्रभावना हुई।

साध्वीश्री जी ने आईडीपीएल, मानसरोवर, अलवाल, नेरेडमैट, यापराल, सुचित्रा ने नियमित लाभ लेने वाले श्रावकों को भी याद करते हुए कहा कि छोटे से क्षेत्र में इतनी धर्म प्रभावना अपने में अद्भुत और अलौकिक है और इसका श्रेय सिर्फ श्रावक समाज को जाता है।

बोइनपल्ली

साध्वी मधुस्मिता जी के सान्निध्य में मंगलभावना समारोह मनाया गया। साध्वी मधुस्मिता जी का चातुर्मास यहाँ पिछले चार महीनों से धर्म आराधना के साथ गतिमान है। चातुर्मास के अंतिम दिवस मंगलभावना समारोह आयोजित किया गया, जिसमें श्रावक-श्राविका समाज ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और समाज के विशिष्ट व्यक्तियों ने साध्वीश्री जी के चातुर्मास के प्रति अपनी मंगलभावनाएँ रखी। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण व बोइनपल्ली महिला मंडल के मंगलाचरण से हुई।

साध्वी मधुस्मिता जी ने बताया कि आज का दिन विदाई का दिन है। इस दिन पूरे चातुर्मास में हुए कार्यों का उल्लेख करने के साथ आगे जीवन में क्या करना चाहिए यह भी बताने का है। साध्वीश्री जी ने इस ऐतिहासिक चातुर्मास में जो भी धर्म साधना की वह गुरुदेव को समर्पित करते हुए कहा कि यह सब गुरुदेव के ही पुण्य प्रताप व कृपादृष्टि से हुआ है। साध्वी सहजयशा जी ने अपने उद्गार व्यक्त किए।

कार्यक्रम में सिकंदराबाद सभा अध्यक्ष सुरेश सुराणा, महासभा सदस्य मुकेश सुराणा, सिकंदराबाद सभा से संयोजक हेमंत संचेती, बोइनपल्ली चातुर्मास संयोजक सतीश दुगड़, चातुर्मास स्थल प्रत्युष आर्केड में प्रवास करने विनोद बैद, राकेश धाड़ेवा, टीपीएफ राष्ट्रीय प्रोजेक्ट चेयरमैन नवीन सुराणा, महिला मंडल मंत्री श्वेता सेठिया, तेयुप मंत्री विरेंद्र घोषल, टीपीएफ अध्यक्ष मोहित बैद, अणुव्रत समिति प्रचार-प्रसार मंत्री रीटा सुराणा आदि सहित अनेक पदाधिकारीगण तथा सदस्यों ने अपनी भावनाएँ व्यक्त की।

ज्ञानशाला परिवार से प्रशिक्षिकाएँ श्वेता घोषल व श्रद्धा पुगलिया ने ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा अच्छी प्रस्तुति करवाई। साध्वीश्री जी के नातिले दुगड़ परिवार बोइनपल्ली व बाफना परिवार मानसरोवर ने गीतिका के माध्यम से अपनी भावनाएँ व्यक्त की। बोइनपल्ली जैन परिवार ने भावपूर्ण विदाई गीत द्वारा अपनी भावनाएँ सुनाई। तेयुप मंत्री विरेंद्र घोषल ने मंगलभावना कार्यक्रम का संचालन किया।

रायपुर

मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में मंगलभावना कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम में न्यायाधीश गौतम चोरड़िया एवं दानमल पोरवाल की विशेष उपस्थिति रही तथा अपनी भावना अभिव्यक्त की। तेयुप के युवाओं ने मंगलाचरण की प्रस्तुति दी। महिला मंडल की बहनों ने पावस प्रवास की झलकियाँ प्रस्तुत की।

इसी क्रम में तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुरेंद्र चोरड़िया, महिला मंडल अध्यक्षा सरिता सेठिया, तेयुप अध्यक्ष वीरेंद्र डागा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष कमल बैंगानी, टीपीएफ के सचिव विपुल जैन ने अपने भाव व्यक्त किए।

अभातेमम की प्रचार-प्रसार मंत्री सरिता बरलोटा, महासभा के कार्यकारिणी सदस्य सहित अनेक पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने अपनी अभिव्यक्ति दी तथा श्रावक-श्राविकाओं ने भी अपने भाव व्यक्त किए। मुनिश्री ने सभी को हमेशा धर्म में रहने का उद्बोधन दिया। समस्त श्रावक-श्राविका समाज के प्रति साधुवाद एवं कृतज्ञता ज्ञापित की। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल मंत्री नेहा जैन ने किया। आभार ज्ञापन सभा के मंत्री सूर्यप्रकाश बैद ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
6 - 12 दिसंबर, 2021

✦ *आदमी को सद्गुणों के विकास और अवगुणों को छोड़ने का प्रयास करना चाहिए।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

मिठाई एवं वस्त्र वितरण

बालोतरा।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप के तत्त्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल ने गरीब व जरूरतमंद बच्चों व परिवारों को मिठाई, वस्त्र बाँटने के साथ खुशियों की रात कार्यक्रम का शुभारंभ किया। तेयुप मंत्री नवीन सालेचा ने बताया कि जरूरतमंद और गरीब परिवारों को दीपावली का महत्त्व बताते हुए नेक रास्ते पर चलने व जीवन में शिक्षा को विशेष स्थान देने की बात कही। कार्यक्रम के अंतर्गत बालोतरा की कच्ची बस्तियों और जसोल फांटा पर कपड़े, मिठाईयों का वितरण की गई।

कार्यक्रम में बालोतरा नगर परिषद के सभापति सुमित्रा जैन ने कहा कि बच्चों द्वारा घर-घर संपर्क कर जरूरतमंद परिवारों व बच्चों के लिए राशि एकत्रित कर इस प्रकार के आयोजन करना सराहनीय व प्रशंसनीय कार्य है।

कार्यक्रम में पार्षद हनुमान पालीवाल, कांतिलाल घांची, अभातेयुप सदस्य मनोज ओस्तवाल, तेयुप अध्यक्ष संदीप ओस्तवाल, उपाध्यक्ष राहुल जीरावला आदि अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्य उपस्थित हुए।

गौशाला में सेवा कार्य

टी-दासरहल्ली।

अभातेयुप के त्रिआयामी उपक्रम में सेवा के क्षेत्र में स्थानीय तेयुप ने बाल दिवस के उपलक्ष्य में ओम गौशाला लक्ष्मीपुरा में सेवा प्रदान की। इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष कुशल बाबेल, सहमंत्री प्रवीण बोहरा, कोषाध्यक्ष हंसमुख बाबेल की उपस्थिति रही।

हॉस्पिटल में मिठाई, फल, जूस का वितरण

साउथ हावड़ा।

तेयुप द्वारा बाल दिवस के अवसर पर हावड़ा हॉस्पिटल के चिल्ड्रन वार्ड में सेवा कार्य किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ हुआ। अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने सभी का स्वागत किया। हॉस्पिटल के चिल्ड्रन वार्ड में ३५ जनों को मिठाई, फल, जूस का वितरण परिषद के युवाओं द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में १४ युवकों ने अपने समय का विसर्जन किया। कार्यक्रम में उपाध्यक्ष ज्ञानमल लोढ़ा, सहमंत्री अमित बेगवानी, राहुल दुगड़ सहित हर्ष बांठिया, अभिषेक खटेड़, रोहित बैद, निखिल बांठिया, हितेंद्र बैद, हेमंत जैन, ऋषभ दुधोड़िया की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संचालन संयोजक मनीष बैद, समित बैद एवं आभार ज्ञापन सह-संयोजक दीपक नखत ने किया।

वृद्धाश्रम में सेवा कार्य

विजयनगर।

तेयुप अभातेयुप निर्धारित त्रिआयामी लक्ष्यों की ओर सतत गतिमान है। इसी कड़ी में गांधी ओल्ड एज होम में सुबह का नाश्ता कार्यक्रम रखा गया।

तेयुप अध्यक्ष अमित दक ने सभी का स्वागत किया एवं सेवा कार्य टीम के प्रति मंगलकामना व्यक्त की। तेयुप, विजयनगर द्वारा सेवा के उपक्रम के अंतर्गत आयोजित इस कार्यक्रम में तेयुप अध्यक्ष अमित दक, सेवा कार्य सहसंयोजक सुशील पारख, श्रेयांश सेठिया एवं सेठिया परिवार से पारिवारिक जन आदि उपस्थित थे। सहयोगी परिवार का आभार कार्यक्रम सह-संयोजक सुशील पारख ने किया। गांधी ओल्ड ऐज होम के संचालक ने तेयुप के इस कार्य की भूरी-भूरी प्रशंसा की।

व्यापक एसडीपी डोनेशन

सरदारपुरा।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा मेगा ब्लड डोनेशन ड्राईव के तहत व्यापक रूप से एसडीपी डोनेशन करवाया जा रहा है। जोधपुर शहर में डेंगू महामारी के कारण प्रतिदिन भारी मात्रा में एसडीपी/प्लेटलेट्स की जरूरत पड़ रही है। विपदा की इस घड़ी में अभातेयुप के समिति सदस्य व तेयुप, सरदारपुरा के मंत्री पूर्ण रूप से समर्पित हो रक्तदाताओं को प्रेरित कर रहे हैं। इस दौरान तेयुप मंत्री कैलाश जैन के प्रयासों से गत दो माह में १५६ व्यक्तियों के लिए जीवनदायी एसडीपी/आरडीपी डोनेट करवा चुके हैं।

अभातेयुप विश्व में सर्वाधिक रक्तदान करवाने वाली संस्था है, जो संपूर्ण भारत में स्वेच्छा से रक्तदान करने वाले स्वयंसेवकों को प्रेरित करने के साथ-साथ अपने सदस्यों को निरंतर रक्तदान, एसडीपी डोनेशन व प्लाज्मा डोनेशन के लिए तैयार रखती है।

अभिनंदन समारोह

कोलकाता।

अणुव्रत संपर्क यात्रा के तहत अणुविभा के राष्ट्रीय पदाधिकारियों का अभिनंदन समारोह एवं नशामुक्ति कार्यशाला का आयोजन अणुव्रत समिति, कोलकाता द्वारा महासभा भवन में किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ अणुविभा के अध्यक्ष संचय जैन ने दीप प्रज्वलित कर किया। शुभारंभ मंगलाचरण से हुआ।

अणुव्रत समिति, कोलकाता के अध्यक्ष प्रदीप सिंघी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में आगंतुक महानुभावों का स्वागत किया। अणुव्रत समिति, कोलकाता की उपाध्यक्ष सुनीता ने कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम में महासभा के पूर्व महामंत्री भंवरलाल सिंघी, टीपीएफ राष्ट्रीय जोनल अध्यक्ष सुशील चोपड़ा सहित अनेक पदाधिकारियों एवं सदस्यों की गरिमामय उपस्थिति रही।

महामंत्री भीखमचंद सुराणा ने कहा कि हमारी संपर्क यात्रा बहुत सफल रही। पंजीकृत समितियाँ ही अणुविभा की सदस्य बन सकती हैं। अणुव्रत और बच्चों का देश पत्रिका से परिवारों को जुड़ने के लिए आह्वान किया। अणुविभा के अध्यक्ष संचय जैन ने अणुव्रत की गति-प्रगति के बारे में बताते हुए कहा कि हमारे १० अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन भी हो चुके हैं।

राष्ट्रीय महानगर के संपादक प्रकाश चिंडालिया ने आचार्यश्री तुलसी और महात्मा गांधी को नैतिकता का पुरोधा बताया। राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी पंकज ने शिक्षकों को आह्वान करते हुए कहा कि अगर शिक्षक संकल्पित हो जाए तो निर्माण की प्रक्रिया शुरू हो सकती है, और बच्चों में आत्महत्या जैसी कुंठा को पनपने से रोका जा सकता है।

चमन ने अणुव्रत की अभिव्यक्ति अपनी कविता के माध्यम से दी। शशि जैन जो कॉरपोरेट स्तर पर सम्मेलन आयोजित करती हैं, उन्होंने भी अपना पूर्ण योगदान देने की बात कही। अंत में राष्ट्रीय गान के द्वारा कार्यक्रम संपन्न हुआ।

आध्यात्मिक मिलन समारोह

चलथान।

मुनि सुव्रतकुमार जी कड़ोदरा से एवं साध्वी चरितार्थप्रभा जी पलसाना से विहार कर चलथान पधारे। दोनों सिंघाड़े का आध्यात्मिक मिलन तुलसी पार्क सोसायटी चलथान में हुआ। महिला मंडल, चलथान द्वारा मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। तेरापंथ सभा परामर्शक तेजमल नौलखा द्वारा स्वागत-अभिनंदन किया गया।

तेयुप, चलथान उपाध्यक्ष राकेश दक ने अपने विचार व्यक्त किए। मुनि सुव्रतकुमार जी स्वामी एवं साध्वी चरितार्थप्रभा जी ने चलथान क्षेत्र पर महत्ती कृपा कराकर ज्ञान की गंगा बहाई। कार्यक्रम में वापी, नवसारी, बारडोली, पलसाना, सूरत, पर्वत पाटिया कामरेज एवं आसपास के श्रावक समाज उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री सुरेशचंद्र पितलिया ने किया। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री दीपक खाब्या ने किया।

जीवन विज्ञान दिवस

मुंबई।

अणुव्रत विश्व भारती के निर्देशन में अणुव्रत समिति द्वारा शासनश्री साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय' एवं साध्वीवृंद के सान्निध्य में जीवन-विज्ञान पर महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल के बच्चों के साथ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी को आचार्यश्री तुलसी द्वारा महाप्रज्ञ अलंकरण दिया गया था। अलंकरण दिवस को जीवन-विज्ञान के रूप में मनाया गया।

अणुव्रत गीत से बच्चों ने मंगलाचरण किया। स्वागत वक्तव्य कोषाध्यक्ष लतिका डागलिया ने किया। मुख्य वक्ता जीवन-विज्ञान प्रशिक्षक उषा जैन ने बच्चों को आसन, प्राणायाम, ध्यान के प्रयोग करवाए।

दक्षिण मुंबई सभाध्यक्ष गणपत डागलिया ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर प्रिंसिपल माधुरी एवं मुख्य वक्ता उषा जैन का सम्मान किया गया। शासनश्री साध्वीश्री जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ के अवदानों को जीवन में अपनाकर हम जीवन को स्वस्थ, संतुलित बना सकते हैं।

मंच संचालन मंत्री वनिता बाफना ने किया। आभार ज्ञापन दक्षिण मुंबई संयोजक किसन राठौड़ ने किया। कार्यक्रम में सहमंत्री अंजु कोठारी, तेयुप से नितेश धाकड़, सह-संयोजक प्रवीण डागलिया, बंसीलाल धाकड़, हिना सियाल, रेणु डागलिया, मेनका डागलिया, उत्सव धाकड़ एवं लगभग ८० बच्चे एवं शिक्षकों की उपस्थिति रही।

कंबल एवं भोजन वितरण

राउरकेला।

राउरकेला में बसंती कॉलोनी स्थित सार्वभौतिक आश्रम में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा वहाँ बच्चों को खाना खिलाया गया और साथ ही कंबल भी वितरण किए गए। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलपाठ से और जयकार लगाकर की गई। महेंद्र कोठारी और उनकी पौत्री मान्या कोठारी के जन्मदिवस के अवसर पर मंडल की बहन संतोष कोठारी ने इस कार्यक्रम को स्पॉन्सर किया। दोनों का जन्मदिन बच्चों ने बहुत ही उत्साह के साथ मनाया।

अध्यक्ष सरोज गोलछा, उपाध्यक्ष सरिता कोचर, मंत्री बिनीता जैन, सहमंत्री कविता डागा, स्नेहलता चोरड़िया, कनक दुगड़ उपस्थित थे। अध्यक्ष सरोज गोलछा ने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की और भोजन झूठा न छोड़ने की प्रेरणा दी।

शपथ ग्रहण समारोह

सरदारपुरा।

टीपीएफ की जोधपुर शाखा की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया। मुनि तत्त्वरुचि जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, अमरनगर में आयोजित हुए शपथ ग्रहण समारोह में नवनिर्वाचित अध्यक्ष पवन बोथरा को आगामी कार्यकाल के लिए शपथ ग्रहण करवाई। जोधपुर के पूर्व महापौर घनश्याम ओझा ने अध्यक्ष के साथ नवनिर्वाचित कार्यकारिणी को शपथ ग्रहण करवाई।

इस अवसर पर तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा समाज के मेधावी छात्र-छात्राओं का सम्मान प्रशस्ति-पत्र व गोल्ड मेडल प्रदान कर किए गए। अध्यक्ष पवन कुमार बोथरा ने बताया कि टीपीएफ तेरापंथ समाज के सभी प्रोफेशनल डिग्री धारक व्यक्तियों का समुह है, जिसका उद्देश्य है कि समाज का कोई भी मेधावी छात्र किसी भी प्रकार के अभाव के कारण उच्च शिक्षा से वंचित नहीं रहे। टीपीएफ अपनी शाखा परिषदों के माध्यम से संपूर्ण भारत में विभिन्न प्रकार के निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन करता हैं

इस अवसर पर जोधपुर में ५३ मेधावी छात्र-छात्राओं और प्रोफेशनल को टीपीएफ गोल्ड मेडल से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के दौरान टीपीएफ के सभी सदस्य मौजूद रहे और समाज के कई गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। मुनिश्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि प्रोफेशनल रत्नों की माला के समान हैं, इनको टीपीएफ ने पूरे भारत में एक धागे में पिरोकर रखने का महत्त्वपूर्ण काम किया है।

कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री महावीर चोपड़ा और सुनील डागा ने किया। आभार ज्ञापन श्वेता जैन द्वारा किया गया।

विनय और विवेक से विद्या शोभित होती है : आचार्यश्री महाश्रमण

बरूंदनी, २३ नवंबर, २०२१

अहिंसा यात्रा के प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः लगभग १० किमी का विहार कर श्रीमुनि कुल ब्रह्मचर्याश्रम वेद संस्थानम् पधारे। प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि आदमी सुखी जीवन जीना चाहता है। जैन आगम में कहा गया है कि इस प्रकार तुम सुखी बन सकते हो। पहली बात है—सुकुमारता को छोड़ो, अपने आपको तपाओ, कठोर जीवन जीने का भी अभ्यास रखो। सुविधा को भोगना एक बात है, भीतर से सुखी होना एक बात है।

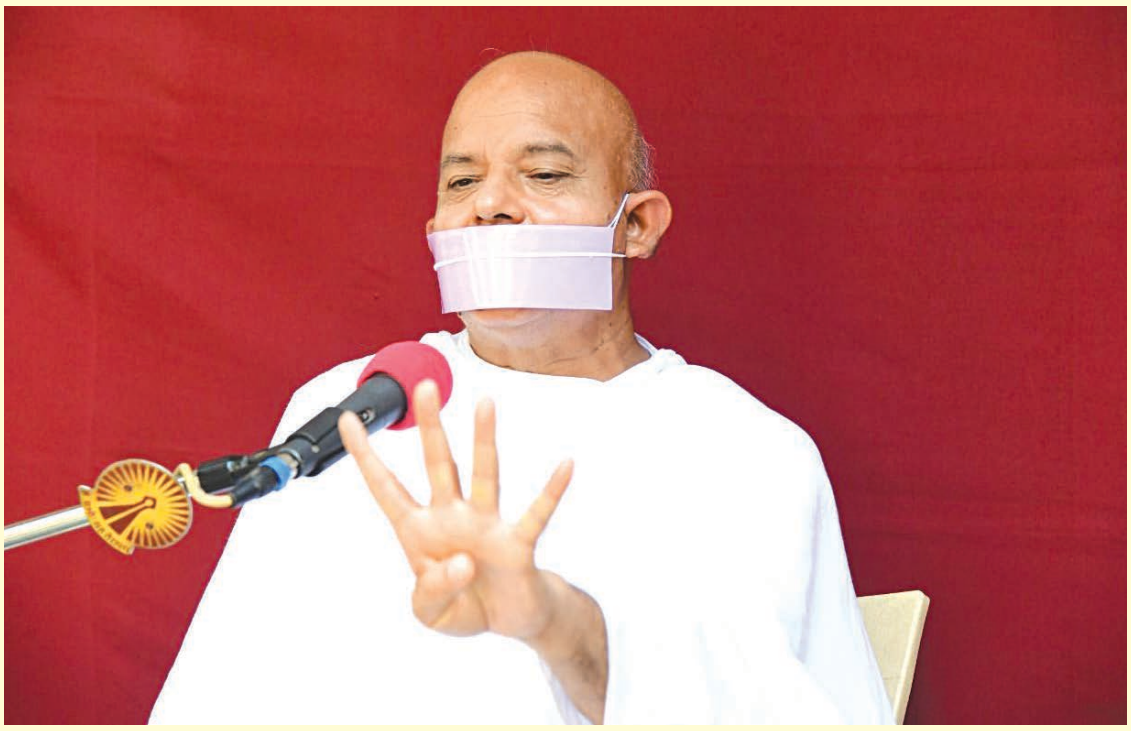

भौतिक साधनों का भी आवश्यकतानुसार उपयोग करना पड़ सकता है, पर आदमी का रूझान संयम की चेतना में रहे। संत का जीवन तो त्यागमय होता है। जैन संतों के पाँच महाव्रत होते हैं। रात्रि भोजन भी नहीं करते हैं। संयम के साथ तप हो सकता है। साधु भिक्षा से भोजन ग्रहण करता है। थोड़ा-थोड़ा कई घरों से भोजन ग्रहण करता है। भोजन शाकाहार हो और साधु के लिए न बना हो। उचित पदार्थ भी न हो। ये सब अहिंसा का पालन है। साधु देख-देखकर पैदल चले।

साधु के पास परिग्रह भी नहीं। जीवन में जितना त्याग-संयम हो, रखें। सादगी रखें। विद्यार्थी में भी संयम हो तभी ज्ञान प्राप्त हो सकता है। व्याकरण तो अलूणी शिला है। उसमें स्वाद नहीं होता है। साहित्य में तो स्वाद आ सकता है। व्याकरण सिखना है, तो रटो, चितारो पुनरावर्तन करो, जिज्ञासा करो और लिखो। याद करने के लिए परिश्रम करना होता है। तभी विद्या का विकास हो सकता है।

सुखार्थी है तो विद्या कितनी-क्या मिलेगी। कठोरता का अभ्यास हो तो, जीवन में विकास हो सकता है। विद्या के साथ घमंड नहीं आना चाहिए। ज्ञान तो अहंकार को हरने वाला हो। विद्या विनय से शोभित होती है। साथ में विवेक भी हो। विद्या, विनय और विवेक की त्रिवेणी है, उसमें स्नान करें। उसमें स्नान करने से जीवन अच्छा बन सकता है।

आदमी भौतिकता में आसक्त न बने। परिश्रम है, तो जीवन में कुछ मिल सकता है। आदमी पुरुषार्थ करे। भाग्य भरोसे न बैठे। जो पुरुषार्थी है, लक्ष्मी उसका वरण करती है। प्रयत्न करने पर भी सिद्धि न मिले तो उसमें हमारा दोष नहीं। जीवन में सत्-पुरुषार्थ करना चाहिए। विद्यार्थी अच्छा पुरुषार्थ करे, यह एक प्रसंग से मसझाया कि पुरुषार्थ को नहीं छोड़ना चाहिए। दीया जलता रहे, मैं पढ़ता रहूँ।

विद्यार्थियों के जीवन में ज्ञान और आचरण अच्छे हों तो जीवन महान बन सकता है। आज यहाँ आएँ हैं। अहिंसा यात्रा के तीन सूत्रों को संस्कृत भाषा में समझाया व विद्यार्थियों एवं ग्रामवासियों को स्वीकार करवाए। विद्यार्थियों का अच्छा विकास होता रहे, अच्छे संस्कार मिलते रहें।

पूज्यप्रवर के स्वागत में पूर्व विधायक विवेक धाकड़, वेद विद्यालय की ओर से डॉ० बद्रीनारायण पंचौली, डॉ० बृजमोहन शर्मा, प्रभुलाल सोयानी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

एक दिवसीय दंपति कार्यशाला का आयोजन

जसोल।

तेयुप के तत्त्वावधान में मुनि धर्मेश कुमार जी के सान्निध्य में एक दिवसीय दंपति शिविर का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की गई और साथ ही मंगलाचरण किया गया। साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी द्वारा रचित गीत तेयुप अध्यक्ष जितेंद्र मांडोत ने अतिथियों एवं सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया।

मंत्री दिनेश वडेरा ने सेमिनार के बारे में जानकारी दी। मुनि धर्मेश कुमार जी ने कहा कि पारिवारिक शांति के सात सुख होते हैं, जिसमें पहला सुख निरोगी काया, दूसरा सुख घर में हो माया, तीसरा सुख सुलक्षणी नारी, चौथा सुख बेटा हो आज्ञाकारी, पाँचवाँ सुख सुस्थान वासा, छठा सुख सत्ता में हो पासा, सातवाँ सुख बेंकुंठवासा मतलब धर्म में हो आस्था। इन सबके साथ गुणों पर चर्चा करते हुए कैसे हो दांपत्य जीवन सुखी विषय पर विस्तारपूर्वक बताया।

मुनि डॉ० विनोद कुमार जी व मुनि यशवंत कुमार जी ने कहा कि परिवार समाज की सबसे छोटी ईकाई है। इसमें परिवार के लोगों का एक-दूसरे से आपसी रिश्ते जुड़े हैं। सभी रिश्तों की अपनी गरिमा होती है। आपसी समझ में स्वर्ग या नरक बसा सकते हैं।

इस कार्यशाला में संपतराज चोपड़ा, कांतिलाल ढेलड़िया, महेंद्र तातेड़, मितुल चौपड़ा, तरुण भंसाली, सहित तेयुप सदस्य, महिला मंडल सदस्य व अन्य लोग भी इस सेमिनार में उपस्थित थे। आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष ललित सालेचा ने किया।

आध्यात्मिक साँप-सीढ़ी प्रतियोगिता आयोजित

डी०वी० कॉलोनी, हैदराबाद।

तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में 'आध्यात्मिक साँप-सीढ़ी' प्रतियोगिता का आयोजन तेयुप, हैदराबाद के तत्त्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा किया गया। साथ ही ज्ञानशाला के बच्चों व प्रशिक्षिकाओं के साथ 'बाल दिवस' मनाया गया। और उनको पुरस्कृत किया गया। 'आध्यात्मिक साँप-सीढ़ी' प्रतियोगिता में कुल १० टीमों ने उत्सुकता के साथ भाग लिया।

कार्यक्रम के दौरान श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही। प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मंजु देवी दुगड़ और चेतन बैद ने प्राप्त किया वहीं दूसरा पुरस्कार चाँद बैद और सुमति बैद ने प्राप्त किया। कार्यक्रम में स्वागत भाषण तेयुप के अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा ने दिया।

कार्यक्रम का संयोजन तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में किशोर मंडल सहप्रभारी अरिहंत गुजरानी, किशोर मंडल संयोजक खुशाल भंसाली, किशोर मंडल सह-संयोजक हितेश सुराणा, तेयुप कार्यकर्ता प्रकाश दफ्तरी, विनय पारख, जिनेंद्र बैद व किशोर मंडल के दिव्यांशु खाटेड का पूर्ण सहयोग मिला। कार्यक्रम का संचालन प्रियंका संकलेचा ओर अरिहंत गुजरानी ने किया।

✦ *व्यक्ति आकृति से नहीं, प्रकृति से अधम अथवा महान् बनता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

रक्तदान शिविर के आयोजन

स्वेच्छा रक्तदान शिविर का आयोजन

साउथ हावड़ा।

मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के अंतर्गत अभातेयुप की शाखा तेयुप द्वारा स्वेच्छा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। रक्तदान शिविर साउथ हावड़ा क्षेत्र की एक सुप्रसिद्ध संस्था जैन ट्यूटोरियल्स में शुरू हुआ। रक्तदान शिविर का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान से हुआ। तेयुप के अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने उपस्थित सभी का स्वागत किया। शिविर की सहयोगी संस्था तेमम की मंत्री रेखा बैंगानी एवं शिविर के प्रायोजक की शिक्षण संस्था जैन ट्यूटोरियल्स के प्रमुख गौतम दुगड़ ने अपने भाव रखे।

शिविर में महिला मंडल की निवर्तमान अध्यक्ष शीला नाहटा एवं महिला मंडल की पूरी टीम, जेटीएन प्रतिनिधि बरखा गीड़िया आदि अनेक अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यगणों की उपस्थिति रही। शिविर में कुल ४१ यूनिट रक्त का संग्रह रहा। शिविर में रंजीत सिंह बैद ने अपने पाँच सदस्य सपरिवार रक्तदान कर जागरूकता का परिचय दिया।

मंत्री गगन दीप बैद ने जैन ट्यूटोरियल्स के प्रमुख गौतम दुगड़ एवं उनके प्रतिष्ठान के कार्यकर्ता, साउथ हावड़ा महिला मंडल, लाइफ केयर ब्लड बैंक एवं सभी रक्तदाताओं का आभार व्यक्त किया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

विजयनगर।

अभातेयुप निर्देशित मेगा ब्लड डोनेशन ड्राईव के अंतर्गत तेयुप, विजयनगर के साथ रक्तदान शिविर का आयोजन जे०सी० रोड स्थित जैन सोलस में किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन राष्ट्रोत्थान ब्लड बैंक के साथ किया गया। राउंड टेबल इंडिया बैंगलोर के रक्तदान संयोजक अनुपम द्वारा इस आयोजन की संपूर्ण व्यवस्था की गई।

महामारी एवं विषम परिस्थिति में भी ३० यूनिट रक्त एकत्रित करना बड़ी उपलब्धि है। इस रक्तदान शिविर के लिए रक्तदाता अपनी बारी का इंतजार करते दिखे। यह रक्तदान सभी रक्तदाताओं एवं राउंड टेबल इंडिया की पूरी टीम के सहयोग से हुआ। इस अवसर पर राउंड टेबल इंडिया के विशेष श्रम के लिए उन्हें साधुवाद दिया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
6 - 12 दिसंबर, 2021

✦ सेवा शाश्वत धर्म है और यह भेदभाव को खत्म करने वाली है। सेवा स्व का समर्पण है और ज्ञान का फल है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

कर्मवाद को समझकर बुरे कर्मों से बचने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

अरोली (रसदपुरा), २७ नवंबर, २०२१

तीर्थंकर तुल्य महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी अरोली पदार्पण पर रसदपुरा ग्राम के निकट माण्डालगढ़ के विधायक गोपाल खंडेलवाल, पूर्व विधायक विवेक धाकड़, सरपंच ज्योति जैन, पूर्व प्रधान गोपाल मालवीय ने पूज्यप्रवर की अगवानी की। ढोल-नगाड़ों और जुलूस के साथ आचार्यश्री रसदपुरा (आरोली) गाँव स्थित राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे। मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि एक दर्शन का सिद्धांत है कि आत्मा का पुनर्जन्म होता हैं पुनर्जन्म का सिद्धांत आस्तिक विचारधारा का सिद्धांत है। जहाँ आत्मा का स्थायी अस्तित्व माना गया है, वहाँ पुनर्जन्म की बात बैठ सकती हैं जहाँ आत्मा नाम का तत्त्व है ही नहीं, या आत्मा शरीर एक ही है, वहाँ पुनर्जन्म की बात संभवतः हो नहीं सकती।

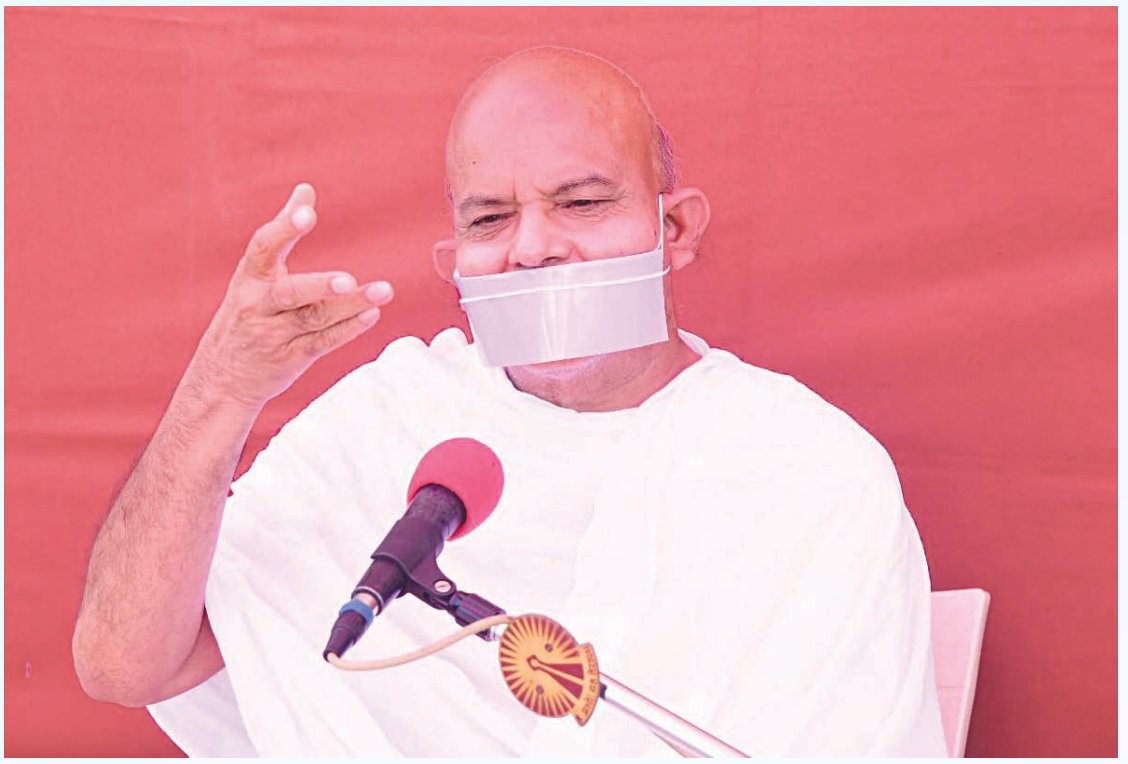

जैसे आदमी पुराने वस्त्रों को छोड़कर नए वस्त्रों को धारण कर लेता है, इसी प्रकार आत्मा एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर को धारण कर लेती है। आज तक हमारी आत्मा ने अनंत जन्म ले लिए हैं। मृत्यु के साथ जन्म जुड़ा है। जन्म है, तो मृत्यु भी अवश्यंभावी है। इस जन्म-मृत्यु का कारण क्या है? शास्त्र में बताया गया है कि हमारे भीतर कषाय रूपी विकार है, इन विकारों के कारण से आत्मा पुनर्जन्म ग्रहण करती है।

जैसे कर्म होते हैं, आदमी अच्छे कर्म करता है, तो अच्छी गति हो सकती है। पाप कर्म ज्यादा करता है, तो खराब गति भी हो सकती है। यह आत्मवाद और कर्मवाद के सिद्धांत हैं। मनुष्य को यह चिंतन करना चाहिए कि मैं कोई असद् कर्म न करूँ, जिसके कारण से मुझे अधोगति में जाना पड़े। अलग-अलग गति में जाने के अलग-अलग कारण हो सकते हैं।

कर्म के अनुसार उसका फल भी मिलता है। यह एक प्रसंग से समझाया कि अच्छे कर्म करने वाला शांति का जीवन जीता है। परलोक के विषय में संदेह है कि क्या पता है या नहीं तो भी बुरे काम मत करो, अच्छे काम करो। जीवन अच्छा जीयो, पापों से बचने का प्रयास करो।

गालियाँ देना या गुस्सा करना बड़ी बात नहीं। हमेशा प्रसन्न रहें, शांति में आनंद है। घास-फूस में अग्नि डालो तो आग लग सकती है। जहाँ गीला है, मिट्टी है, वहाँ अग्नि नहीं लग सकती। आदमी सूखा मैदान बनकर रहे। व्यवहार हमारा सद्भावनापूर्ण रहे। दुर्भावना किसी के साथ न रखें। सबसे बड़ा विश्वास अपनी आत्मा-परमात्मा व धर्म का करें।

जैसी करनी वैसी भरणी, सुख-दुःख स्वयं मिलेगा। सुख-शांति पाना तो चाहते हो, पर दूसरों को सुख-शांति देते भी हो क्या? दूसरों को आध्यात्मिक चित्त समाधि दें। पिछले जन्म के पापों का फल भी भोगना पड़ सकता है। कर्म किसी को नहीं छोड़ता। राजा हो या रंक। हमें मानव जीवन प्राप्त है, इसका हम सद्-उपयोग करें। अहिंसा यात्रा के तीन सूत्रों को समझाकर स्वीकार करवाए। हम कर्मवाद को समझकर बुरे कर्म करने से बचने का प्रयास करें। सुमति गोठी को संबल-आशीर्वाद प्रदान करवाया।

पूज्यप्रवर के स्वागत में नंदिनी जैन, दीपक त्यागी, ज्योति जैन, राजेश जैन, पूर्व प्रधान गोपाल मालवीय, विवेक धाकड़ (पूर्व विधायक), गोपाल खंडेलवाल (विधायक), संजय बरड़िया, सुमति गोठी, बिजोलिया ठिकाने के सौभाग्य सिंह ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अहिंसा यात्रा : चित्रमय झलकियाँ

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **संदीप कोठारी** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**